चतुर्थ अध्याय के अर्न्तगत प्रस्तुत बंदिशें भी सी. डी. एवं इन्टरनेट के माध्यम से शोधार्थी को प्राप्त हुई है। जिस प्रकार उपशास्त्रीय विधाओं में ठुमरी, दादरा, टप्पा के अर्न्तगत संगीत और साहित्य का अनूठा समन्वय देखने को मिलता है उसी प्रकार उपशास्त्रीय ऋतुपरक विधाओं में संगीत साहित्य अपनी अहम् भूमिका निभाता है।

कजरी सावन में गाई जाती है अतः कजरी में सावन के गीतों का आधिक्य देखने को मिलता है। सावन ऋतु के अनुरूप प्रकृति का चित्रण भी बड़ी सुन्दरता से किया जाता है। जैसे– बिजली का चमकना, वृक्ष पर पत्तियों का आ जाना, दादुर, मोर, पपीहा, कोयल आदि का बोलना आदि। कजरी गीतों में श्रृंगार रस का आधिक्य होता है एवं विरहदग्धा नायिका का चित्रण भी किया जाता है। कजरी गीत सावन से सम्बन्धित होने के कारण इसमें उन रागों का प्रयोग किया जाता है जिनका सम्बद्ध सावन ऋतु से होता है जैसे– मल्हार अंग, सारंग अंग आदि। कजरी में कोमल स्वरों का प्रयोग कम पाया जाता है एवं शुद्ध स्वरों का प्रयोग अधिक होता है। कजरी में खमाज, देस, तिलक कामोद, भैरवी, काफी, गारा, झिंझोटी इत्यादि रागों की छाया दिखाई देती है।

'कजरी' (राग पीलू) बेगम अख्तर ताल – दीपचंदी

स्थाई– घिर कर आये बदरिया राम,
श्याम बिन सूनी सेजरिया हमार।

अन्तरा– बदरा गरजे बिजली चमके
परत बूंदन फुहार रे, राम–श्याम बिन.....

स्थाई–

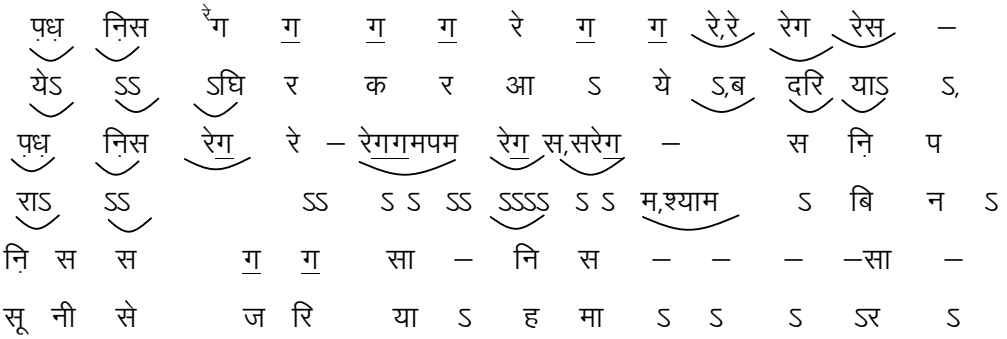

–	–	–	–	–	–	–	–	–	रेग	ग	ग
									घिर	क	र
ग	–	ग	–	–	–	रे	रे	ग	स	–	–
आ	ऽ	ये	ऽ	–	–	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ
नि़	स	निस	रे	–	गस	सा	–	ग	रे	स	नि़
रा	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽम	श्या	ऽ	म	ऽ	बि	न
प़	–	–	नि़	स	–	स	ग	ग	रे	ग	स
ऽ	ऽ	ऽ	सू	नी	ऽ	से	ज	रि	या	ऽ	ह
स	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	पनि़
मा	ऽ	र							–	–	श्याऽ
स	–	–	–	–	–	नि़	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ			
–	–	–	–	–	पनि़	सरे	ग	–	–	–	–
			–	–	श्याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सरे	–	–	–	–	–	सग	स	–	सग	–	निस
ऽम	ऽ	ऽ				श्या	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	म
–प़	पनि़	निस	ग	नि़	स	–	–	–	रेग	ग	ग
ऽबि	नाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ				घिर	क	र
गम	–	–	रे	–	–	ग	स	स	स	–	–
आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ
×			0			2			0		
–	–	निस	रेग	मप	धपम–	ग	ग	ग	–	स	नि़
–	–	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	म	श्या	ऽ	म	बि
प़–	नि़	स	–	–	–	–	स	गग	रे	ग	स
नऽ	सू	नी	ऽ				से	जरि	या	ऽ	ह
स	–	स									
मा	ऽ	र									
×			0			×			0		
ग	–	ग	ग	म	–	–	–	–	–	ग	–
श्या	ऽ	म	बि	न	ऽ	–	–	–	–	सू	ऽ

–	–	–	ग	–	म	ग	म	ग	ग	रे	स
			नी	ऽ	से	ज	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ
–	–	स	रेम	–	–	–	–	–	रे	ग	म
		ह	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग^{म}	–	–स	–	नि़	–	प़	नि़	–	स	ग	ग
ऽ	ऽ	ऽर	ऽ	रा	ऽम	सू	नी	ऽ	से	ज	रि
रे	ग	स	स	–	–	–	–	ग	रे	–	स
या	ऽ	ह	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
–	–	–	–	–	–	गग	ग	ग	ग	–	–
					घिर	क	र	आ	आ	ऽ	ऽ
रे	–	–	रे	म	प	धपम	ग^{प}	–	ग	–	–
ये	ऽ	ऽ	ब	द	रि	याऽऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ
स	–	–	स	ग	रे	नि़	प़	–	नि़	–	स
म	ऽ	ऽ	श्या	म	ऽ	बि	न	ऽ	सू	ऽ	नी
–	स	–	–	ग	ग	स	–	स	ग	रे	–स
ऽ	स	ऽ	ऽ	ज	रि	या	ऽ	ह	मा	ऽ	ऽर
0			×			0			×		

अन्तरा :

									–	स	ग
									–	ब	द
ग	–	ग	म	ग	–	–	–	–	स	–	–
रा	ऽ	ग	र	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	ग	ग	–
									बि	ज	–
म	म	म	म	–	–	म	ग	–	म	–	–
ली	च	म	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	रे	स	–	–	–	–	–	–	स
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						ब
ग	म	प	–	–	–	–	–	–	–	–	–

द	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	मग	सनि	प़	–	–	नि़	स	–	स	ग	–
ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–	ग	ग	गम	ध	पम	म	म	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ब	द	राऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग[म]	ग	–	स	–	–	–	–	–	स	ग	ग
ग	र	ऽ	जे	ऽ	ऽ				ब	द	रा
म	ग	–	–	म	प	प	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	र	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मग	–	स	ग	मप	–	–	–	–	–	–	–
ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ						
–	–	–	–	ग	ग	म	–	मम	म	–	ग
				बि	ज	ली	ऽ	चम	के	ऽ	ऽ
–	मग	–	रे	नि़स	गरे	–स	प	प	प	प	प
ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	राऽ	ऽऽ	ऽम	प	र	त	बूं	द
प	प	मप	धम	पध	प	ग	रे	स	ग	रे	–
न	फु	हा	ऽऽ	ऽऽ	र	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग[म]	–	ग	–	–	–	स	–	ग	रे	स	नि़
रा	ऽ	म				श्या	ऽ	म	ऽ	बि	न
नि़	स	स	गग	स–	नि़	स	–	स			
सू	नी	से	जरि	याऽ	ह	मा	ऽ	र		लग्गी का प्रयोग[1]	
×			0			×			0		

साहित्यानुसार भाव व रस –

कजरी एक लोकगीत है जो वर्षा ऋतु में गाई जाती है। कजरी गीतों में वर्षा ऋतु का वर्णन, विरह वर्णन, राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन अधिकतर मिलता है। किसी विरहणी नायिका आदि के मनोभाव का चित्रण इसकी मुख्य विशेषता है। प्रस्तुत कजरी में प्रयुक्त साहित्य के द्वारा उत्का नायिका (नायक के ना आने से चिन्तित) के विरह के भाव को पुष्ट किया जा रहा है, जिससे स्वतः ही बरबस श्रृंगार रस के वियोग पक्ष की अनुभूति हो रही है। प्रस्तुत कजरी में विरहिणी नायिका सावन मास में मेघाच्छादित आकाश को देखकर अपनी पीड़ा निम्नवत् व्यक्त कर रही है। यथा–यद्यपि आकाश में नीर भरे मेघ घिर

चुके है परन्तु अपने आप को सधा रूप में देखकर नायिका और अधिक पीड़ा का अनुभव कर रही है क्योंकि उसके श्यामरूपी साजन नहीं आये है। अतः आतुर उत्का नायिका की विरहाविवेक से पूर्ण वेदना प्रस्तुत कजरी के साहित्य में व्यक्त इतः हो रही है। उत्का नायिका अपनी विरहा अवस्था में सावन ऋतु में बादलों की ओर देखकर कह रही है कि बादल घिर आये है और ऐसे में नायक रूपी कृष्ण के साथ ना होने पर उसको अपनी सेज सूनी रहने का दुख सता रहा है। बादल गरज रहे है, बिजली चमक रही है, बारिश की फुहारें पड़ रही है, परन्तु इस ऋतु में नायक का साथ न होना नायिका के दुख का कारण है।

रागानुसार रस –

प्रस्तुत कजरी राग मिश्र पीलू पर आधारित है। पीलू एक संकीर्ण प्रकृति का राग है अतः संकीर्ण प्रकृति का राग होने के कारण इसमें बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है जिससे आर्विभाव तिरोभाव के माध्यम से अन्य रागों की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। चूँकि कजरी एक लोकविधा है और लोकविधा में लोक के विविध रंग दिखाई देते है जोकि किसी एक विशेष राग के माध्यम से सम्भव नहीं है इसलिए किसी भी लोकगीत प्रकार में विशेष राग का प्रयोग नही किया जाता। प्रस्तुत कजरी में विशेषतः एक राग को महत्व नहीं दिया गया है इसलिए प्रस्तुत कजरी राग मिश्र पीलू में निबद्ध की गई है। अतः प्रस्तुत कजरी में रागेतर प्रयोग स्पष्टतः दृष्टव्य नहीं होते। केवल कतिपय स्थानों पर रे म म स्वर संगति से 'राग देस' तथा ' म ग सा नि प नि सां' संगति से 'तिलंग राग' की अनुभूति होती है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भावः– 'कजरी' नामानुसार इसमें वर्षा ऋतु सम्बन्धी शब्दों का प्रयोग हुआ है तथा साहित्यानुसार भाव भी संप्रेषित किये गये है। साहित्य में स्वरों के समन्वय द्वारा वर्षा ऋतु के वर्णन के साथ–साथ नायिका के विरह का वर्णन भी दृष्टिगोचर हो रहा है।

									रे^{ग}	ग	ग
									घिर	क	र
ग	–	ग	–	–	–	रे	रे	ग	सा	–	–
आ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ
नि़	सा	निसा़	रे	–	गसा़	सा	–	ग	रे	सा	नि़

रा ऽ ऽऽ   ऽ ऽ ऽम   श्या ऽ म   ऽ बि न
प – –   नि़ सा –   सा ग ग   रे ग सा
ऽ ऽ ऽ   सू नी ऽ   से ज रि   या ऽ ह
सा – सा
मा ऽ र

निम्न उद्धरण में भी स्वर–साहित्य समन्वय के माध्यम से विरह का भाव परिलक्षित हो रहा हैः–

साग सा –   सग – नि सा
श्या ऽ ऽ   ऽऽ ऽ म
–प़ प़नि़ नि़सा   ग नि़ सा
ऽबि नाऽ ऽऽ   ऽ ऽ ऽ

ग – ग   ग – –   – – –   – ग –
श्या ऽ म   बि न ऽ   ऽ ऽ ऽ   – सू ऽ
– – –   ग – म   ग म ग   ग रे सा
ऽ ऽ ऽ   नी ऽ से   ज रि ऽ   या ऽ ऽ
– – सा   रेम – –   – – –   रे ग म
ऽ ऽ ह   मा ऽ ऽ   ऽ ऽ ऽ   ऽ ऽ ऽ
ग म – सा
ऽ ऽ ऽर

अन्तरे में ऋतु सम्बन्धी के साथ–साथ नायिका के विरह का वर्णन भी किया गया हैः–

ग ग गम   ध पम ग   म – –
ब द राऽ   ऽ ऽऽ ऽ   ऽ ऽ ऽ
ग म ग –   सा – –
ग र ऽ   जे ऽ ऽ

2

– ग ग   म – मम   म – ग

			बि	ज	ली	ऽ	चम	के	ऽ	ऽ
–	मग	–	रे	निसा	गरे	सा	प	प	प	प	प
ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	राऽ	ऽऽ	ऽम	प	र	त	बूं	द
प	प	मप	धम	पध	प						
न	फु	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	र						

शैली पर ताल का प्रभावः–

कजरी गायन हेतु अधिकांशतः दादरा एवं कहरवा तालों का प्रचलन होता है, किन्तु दादरा एवं दीपचंदी ताल का प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है। शैली पर ताल का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। ताल प्रयोग के द्वारा शैली में लोकरंजन के भाव पुष्ट होते है। प्रस्तुत कजरी में प्रयुक्त शब्दों के अनुसार दादरा ताल का चयन कियागया है।

'कजरी' गिरिजा देवी ताल – दादरा

स्थायीः– बरसन लागी बदरिया रूम झूम के

अन्तराः– बादल गरजे बिजुरी चमके

बोलन लागी कोयलिया रूम झूम के

कजरी – बरसन लागी बदरिया (ताल–दादरा)

								गऽ	ग	म
								बर	स	न
गऽ	रेग	सा	–	–	रे	नि़	नि़	सा	–	–	–
लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ
रे	म	म	ग	रेग	रेसा	सा	–	–	गऽ	ग	म
रू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ	के	ऽ	ऽ	बर	स	न
गऽ	रेग	सा	–	–	रे	नि़	नि़	सा	–	–	–
लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ
सारे	गरे	–	रेग	म	ग	सारे	गम	–	–	–	–
रूऽ	ऽऽ	म	झूऽ	ऽ	म	केऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सारे	गम	––	––	––	रे	नि़	रे	सा	–	–	–

ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	सा	नि़	ध़	सा	–	–	ध़
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	ब
नि़	रे	सा	–	–	–	रे	ग	सा	–	–	रे
द	ऽ	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब
नि़	–	रे	सा	–	–	म	–	–	–	–	–
द	ऽ	रि	या	ऽ	ऽ	रू	ऽ	म	झू	ऽ	म
ग	–	रे	ग–	ग	म	ग–	रेग	सा	–	–	रे
के	ऽ	ऽ	बर	स	न	लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
नि़	नि़	सा	–	–	–	रे	म	म	ग	रेग	रेसा
द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ
सा	–	–	ग–	ग	म	ग–	रेग	सा	–	–	रे
के	ऽ	ऽ	बर	स	न	लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
नि़	नि़	सा	–	–	–	रे	म	म	ग	रेग	रेसा
द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ
सा	–	–	ग–	ग	म	ग–	रेग	सा	–	–	रे
के	ऽ	ऽ	बर	स	न	लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
नि़	नि़	सा	–	–	–	रे	म	म	ग	रेग	रेसा
द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	म	झूऽ	ऽऽ	मऽ
सा	–	–	ग–	ग	म	ग–	रेग	सा	–	–	नि़
के	ऽ	ऽ	बर	स	न	लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
सा	–	–	–	–	–	ग	रे	ग	रे	ग	रे
द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	ग	–	म	सा	–	–	ग–	ग	म
ऽ	ऽ	म	झू	ऽ	म	के	ऽ	ऽ	बर	स	न
ग–	रेग	सा	–	–	रे	नि़	नि़	सा	–	–	–
लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सागऽ	मध़	––	प	ग	प	म	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ
–	–	–	–	ग	रे	सा	–	सा	ग	प	म
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या

–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	म	–	–	–	म	–	–	मग	रेप	धसा
ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	रू	ऽ	म	झूऽ	ऽऽ	ऽऽ
रेग	म–	–	ग	–	रे	सा	–	–	ग–	ग	म
ऽऽ	ऽऽ	म	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बर	स	न
ग–	रेग	सा	–	–	रे	नि़	नि़	सा	–	–	–
लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	–	–	–	–	निसा	रे	सा	नि़	नि़	ध़प़
ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	रू ऽ	ऽ	म	झू	–ऽ	ऽम
प़	म़	प़	प़नि	–	–	–	–	–	–	–	सा
के	ऽ	ऽ	बर	स	न	ला	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
नि़	सा	–	–	–	–	निसा	रे	सा	नि	–	नि़ध़प़
द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	रू ऽ	ऽ	म	झू	ऽ	ऽऽम
–	–	–	म–	प़	नि़	–	–	–	–	–	नि
के	ऽ	ऽ	बर	स	न	ला	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
सा	–	–	–	–	–	ग	रे	म	–	ग	–
द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	म	झू	ऽ	म
सा	–	–	ग–	ग	म	ग–	रेग	सा	–	–	रे
के	ऽ	ऽ	बर	स	न	लाऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
नि़	नि़	सा	–	–	–	रे	म	म	ग	रेग	रेसा
द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ
सा	–	–									
के	ऽ	ऽ									
×			0			×			0		

अन्तरा –

–	सा	–	ग	–	म	प	–	–	–	–	–
ऽ	बा	ऽ	द	ऽ	ल	ग	र	ऽ	जे	ऽ	ऽ
–	प	–	–	–	–	ग	–	म	म	–	–
ऽ	बि	ऽ	जु	री	ऽ	च	म	ऽ	के	ऽ	ऽ

–	सा	–		ग	–	म	प	–	–	–	–	–
ऽ	बा	ऽ		द	ऽ	ल	ग	र	ऽ	जे	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	–	गम	पनि	ध	नि	सां	नि
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	बि	ज	ल
सां	–	–		–	–	–	ध	नि	ध	प	–	–
ली	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	च	म	के	ऽ	ऽ	ऽ
ध	प	म		म	ग	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	ग	–		म	–	ग	रे	–	–	प	प	–
ऽ	बा	ऽ		द	ऽ	ल	ग	र	ऽ	जे	ऽ	ऽ
–	प	–		–	–	–	ग	–	प	म	–	–
ऽ	बि	ऽ		जु	री	ऽ	च	म	**S**	के	ऽ	ऽ
–	सा	–		ग	–	म	प	–	–	–	–	–
ऽ	बा	ऽ		द	ऽ	ल	ग	र	ऽ	जे	ऽ	ऽ
–	प	–		–	–	–	ग	–	प	म	–	–
ऽ	बि	ऽ		जु	री	ऽ	च	म	**S**	के	ऽ	ऽ
–	–	–		ग	ग	म	ग	रे	सा	–	–	रे
ऽ	ऽ	ऽ		बो	ल	न	ला	ऽ	गी	ऽ	ऽ	को
नि़	–	सा		–	–	–	–	–	–	–	–	नि़
य	लि	ऽ		या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	को
नि़	–	सा		–	–	–	रे	म	म	ग	रेग	रेसा
य	लि	या		ऽ	ऽ	ऽ	झू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ
सा	–	–		ग–	ग	म	ग–	रेग	सा	–	–	रे
के	ऽ	ऽ		बर	स	न	लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
नि़	नि़	सा		–	–	–	रे	म	म	ग	रेग	रेसा
द	रि	या		ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ
सा	–	–		ग–	ग	म	ग–	रेग	सा	–	–	रे
के	ऽ	ऽ		बर	स	न	लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब
नि़	नि़	सा		–	–	–	रे	म	म	ग	रेग	रेसा
द	रि	या		ऽ	ऽ	ऽ	रू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ
सा	–	–										
के	ऽ	$ऽ^2$										
x				0			x			0		

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत कजरी में ऋतु से सम्बन्धित शब्दों के प्रयोग द्वारा प्रकृति चित्रण का वर्णन किया गया है। प्रकृति चित्रण के साथ ही वर्षा से नायिका का मन किस प्रकार आल्हादित है, प्रस्तुत कजरी के माध्यम से व्यक्त किया गया है जिसके द्वारा नायिका के प्रसन्नता के भाव को अभिव्यक्त किया गया है। बादल झूम–झूम के बरस रहे है, बिजली चम रही है, कोयल भी इस ऋतु में अपनी मधुर वाणी का गान कर रही है और रिमझिम फुहारों के मध्य नायिका का हृदय बेहद प्रसन्नचित है, जिससे बरबस ही श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हो रही है।

स्वरानुसार रस

जैसा कि पहले बताया गया है कि कजरी एक लोकविधा है अतः इसमें विशेषतः एक राग को प्रधानता नही दी जाती। इसी प्रकार प्रस्तुत कजरी का गायन भी किसी विशेष राग में निबद्ध ना होकर लोकसंगीत में प्रयुक्त होने वाले स्वरों के मध्य ही गायन हुआ है। इस प्रकार प्रस्तुत कजरी में प्रयुक्त होने वाले स्वरों के द्वारा भी श्रृंगार रस परिलक्षित हो रहा है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव

प्रस्तुत कजरी में गिरिजा देवी द्वारा प्रयुक्त स्वर एवं शब्दों के संयोजन द्वारा नायिका के प्रसन्नता का भाव परिलक्षित हो रहा है।

									ग–	ग	म
									बर	स	न
ग–	रेग	सा	–	–	रे	नि़	नि़	सा	–	–	–
लाऽ	ऽऽ	गी	ऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ
रे	म	म	ग	रेग	रेसा	सा	–	–			
रू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ	के	ऽ	ऽ			

नि़	सा	–	–	–	–	नि़सा	रे	सा	नि़	नि़	–प़
ब	द	रि	या	ऽ	ऽ	रू ऽ	ऽ	म	झू	ऽ	ऽम
प़	म़	प़	प़नि	–	–	–	–	–			
के	ऽ	ऽ	बर	स	न	ला	ऽ	गी			

अन्तरे में स्वर और साहित्य के समन्वय द्वारा प्रकृति का चित्रण गिरिजा देवी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है:–

–	सा	–	ग	–	म	प	–	–	–	–	–
ऽ	बा	ऽ	द	ऽ	ल	ग	र	ऽ	जे	ऽ	ऽ
–	प	–	–	–	–	ग	–	म	म	–	–
ऽ	बि	ऽ	जु	री	ऽ	च	म	ऽ	के	ऽ	ऽ
–	–	–	ग	ग	म	ग	रे	सा	–	–	रे
ऽ	ऽ	ऽ	बो	ल	न	ला	ऽ	गी	ऽ	ऽ	को
नि़	–	सा	–	–	–	रे	म	म	ग	रेग	रेसा
य	लि	या	ऽ	ऽ	ऽ	झू	ऽ	म	झू	ऽऽ	मऽ
सा	–	–									
के	ऽ	ऽ									

शैली पर ताल का प्रभाव :–

जैसा कि पहले बताया गया है कि कजरी विधा में अधिकतर कहरवा और दादरा ताल का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत कजरी में शब्दों के चयन के अनुसार दादरा ताल का प्रयोग किया गया है।

'कजरी' (राग मिश्र पीलू) गिरिजा देवी ताल – अद्धातिताल

स्थाईः– बैठी सोचे ब्रजवास, सूनो लागे मेरा धाम
नहि आये घनश्याम, घिर आई बदरी

अन्तराः–1 आई सावन की बौर बहार,
बोले मोरवा पुकार,
परे बूँदन फुहार, घिर आई बदरी।।

अन्तराः–2 कान्हा हमे बिसराये, रहे सौतिन लुभाने।

करूँ कौन उपाय, घिर आई बदरी।।

नि	–	सा	–	नि़	धनि़	ध	मप़	नि	–	सा	नि़	सा	धनि़ध	नि	सा
बै	ऽ	ठी	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	सो	ऽ	चे	ब्र	ज	बाऽऽ	ऽ	म
नि़सा	गरे	सा	धध़	मप	मप	नि	–	सा	–	सा	रेग	ग	नि	–	स
बैऽ	ऽऽ	ऽ	ठीऽ	ऽऽ	सोचे	ब्र	ज	बा	म	सु	नोऽ	ला	ऽ	गोऽ	ऽऽ
ग	प	म	–	नि़रे	सा	नि़	नि़	सा	ग	–	रेग	रे	सा	मगरेगम	गरेगरे
मे	रो	धा	म	नऽ	हि	ऽ	आ	ए	घ	न	श्या	ऽ	म	घिऽऽऽर	आऽईऽ
सा	नि़														
ब	द														
सा	–	–	–	–	साग	रेसा	ध़	म़	प़	–	म़	प	नि	–	–
री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बैऽ	ऽऽ	ठी	ऽ	ऽ	ऽ	सो	चे	ब्र	ज	ऽ
–	सा	नि़	ऽ	ध़	नि़	सा	–	–	नि़सा	ध	प	–	सा	–	–
ऽ	वा	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	सोचे	ब्र	ज	ऽ	वा	ऽ	म
–	धनि़	सा	रे	गरे	सारे	गरे	सा	–	नि़	सा	नि	ध़	नि़	नि़सा	–
ऽ	सोचे	ब्र	ज	वाऽ	ऽऽ	ऽऽ	म	ऽ	सो	चे	ऽ	ऽ	ऽ	ब्रज	वा
–	–	–	–	–	–	ग	ग	–	–	ग	म	गरे	गरे	नि़	स
ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सू	नो	ऽ	ऽ	सू	नो	लाऽ	गेऽ	मे	रो
सा	ध	प	–	–नि	नि़	सा–	–	–	नि़	सा	रे	रेग	ग–	ग	–
धा	ऽ	म	ऽ	ऽमे	रो	धाऽ	म	ऽ	न	हिं	आ	ऽऽ	ऽऽ	ये	ऽ
ग	सा	रा	–	रेग	रेग	रेम	गरे	सा	–	–	ग	म	ग	रेसा	नि़
ध	न	श्या	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	म	ऽ	धे	रि	आ	इब	द
सा	–	–	–	नि़	सा	ग	रे	सा	ध	–	नि़	सा	–	गग	रेग
री	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	हि	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	घन	श्या
प	म	ग	रे	–	–	–	–	–	ग	म	प	म	ग	रे	सानि़

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	धि	ऽ	ऽ	र	आ	इ	बद
सा	–	–	–	साग	रेसा	ध़	–	–	नि़	–	सा	–	नि	–	–
री	ऽ	ऽ	ऽ	बैऽ	ऽऽ	ठी	ऽ	ऽ	सो	ऽ	चे	ऽ	सो	ऽ	ऽ
–	–	सा	–	–	–	नि	साप	सा	–	–	–	–	–	ग	गरे
ऽ	ऽ	चे	ऽ	ऽ	ऽ	सो	चेब्र	ज	वा	ऽ	म	ऽ	ऽ	सो	चेब्र
सा	नि	ऽ	सा	–	साग	रेग	सा	–	–	–	–	ग	रे	ग	म
ज	वा	ऽ	म	ऽ	सोऽ	ऽऽ	चे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सो	चे	ब्र	ज
ग	–	–	–	ग	–	म	ग	म	ग	–	–	म	रे	प	–
वा	ऽ	म	ऽ	सू	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ	ला	गे	मे	रो	ऽ	ऽ
–	धा	–	म	ग	सा	नि	ग	ग	सानि	सा	–	गम	ग	रे	सानि़
ऽ	धा	ऽ	ऽ	म	न	हिं	आ	ये	घन	श्या	म	घिर	आ	इ	बद
सा	–	–	–												
री	ऽ	ऽ	ऽ												
×				2				0				3			

अन्तरा–1

–	–	नि़	रे	सा	नि़	नि़	साम	ग	–	ग	मग	–	–	–	स
ऽ	ऽ	आ	ऽ	ई	ऽ	सा	वन	की	ऽ	बौ	ऽऽ	ऽ	ऽ	र	ब
ग	रे	सा	नि़	नि़	सा	–	–	नि़सा	रेग	मग	सा	रे	सा	–	–
हा	ऽ	र	ऽ	सा	व	न	ऽ	साऽ	ऽऽ	वन	की	ब	हा	र	ऽ
ग	––	–	–	–	म	ग–	–	–	ग	मग	म	ग	प–	––	––
सा	वन	की	ऽ	ऽ	ब	हार	ऽ	ऽ	बो	लेऽ	मो	र	वाऽ	ऽऽ	ऽऽ
––	––	ध	म	–	ग	–	–	–	रेसा	गरे	मग	म–	–	प	म
ऽऽ	ऽऽ	पु	का	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	साऽ	वऽ	नऽ	कीऽ	ऽ	ब	हा
ग	–	–	–	गम	गम	ग	म	मप	––	प	–	–	–	पध	निसा
र	ऽ	ऽ	ऽ	बोऽ	लेऽ	मो	र	वाऽ	ऽऽ	मो	र	वा	पु	काऽ	ऽऽ
निसां	निसां	धनि	सां–	संनिधपम		–ध	पध	–	निसां	पप	ग–	नि़सा	रे	ग	–	–
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ		ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रऽ	परे	ऽ	बूँ	दन	फु
–	–	–	–	रेग	रेसा	सारे	सानि़	–	नि़	सा	–	–	–	–	नि़

हा	ऽ	ऽ	र
साग	गरे	गम	ग–
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा	–	निसा	नि
री	ऽ	नऽ	ऽ
सा	–	निसा	स
री	ऽ	नऽ	हि
सा	–	निसा	स
री	ऽ	नऽ	हिं
सा	–	–	–
री	ऽ	ऽ	ऽ

ऽऽ	ऽऽ	ऽप	ऽरे
पध	पध	नि	रे
ऽऽ	ऽऽ	द	नफुं
सा–	ग–	–	रेग
हिऽ	आ	ये	घन
प	ग	ग	सानि
ऽ	आ	ये	घन
प	ग	ग	सानि
आ	ये	घ	न

ऽ	बूँ	द	ऽ
गरे	सा	ग	म
हाऽ	र	धि	र
रेसा	–	ग	म
श्या	म	घि	र
सा–	–	ग	म
श्या	म	घि	र
सा–	–	ग	म
श्या	म	घि	र

ऽ	ऽ	ऽ	बूँ
रे	ग	सा	नि
आ	ई	ब	द
रे	ग	सा	नि़
आ	ई	ब	द
ग	रे	सानि	नि़
आ	ई	ब	द
ग	रे	सा	नि़
आ	ई	ब	द

अन्तरा–2

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	ग	म
ये	ऽ	र	हे
–	निसा	निसा	––
ऽ	कान	हाऽ	हमें
गरे	गम	ग	–
ऽऽ	ऽऽ	ये	ऽ
ग	म	प	प
र	हे	सौ	ति
ग	–	–	–
कौ	न	उ	प
सा	–	निसा	स
री	ऽ	नऽ	हिं
×			

		निरे	सानि
ऽ	ऽ	कान	हाऽ
ग	म	रेग	मप
सौ	ति	नऽ	ऽऽ
ग	–	म	ग
बि	स	रा	ये
–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	धनि	धनि	ध
न	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
रे	ग	रे	स
ऽ	ऽ	य	ऽ
ग	ग	–	–
आ	ये	घ	न
2			

–	सा	ग	रे
ऽ	ऽ	ह	मे
–	–	रे	सा
ऽ	ऽ	लु	भा
ग	म	प	ध
र	हे	सौ	ति
नि़	सा	नि़	साग
का	नहा	ह	मेंबि
प	–	प	म
ऽ	ऽ	लु	भा
–	गम	पनि	धप
ऽ	घिऽ	ऽऽ	ऽर
0			

ग	म	–	ग
बि	स	ऽ	रा
–	–	–	–
ऽ	ये	ऽ	ऽ
प–	ग	मप	पम
नलु	भा	ऽऽ	ऽऽ
म	ग	–	–
स	रा	ऽ	ये
ग	–	नि	सा
ये	ऽ	क	ऊँ
ग	रे	सा	नि
आ	ई	ब	द
3			

कहरवा की लय–

		निसा	रे	ग	रे	ग	–	रेग	रेसा	ग	म	रे	ग	सा	नि़
		नऽ	हिं	आ	ये	घ	न	श्या	मऽ	घि	र	आ	ई	ब	द
सा	–	निसा	रे	ग	रे	ग	–	रेग	रेसा	ग	म	ग	रे	सा	नि़
री	ऽ	नऽ	हिं	आ	ये	घ	न	श्या	ऽम	घि	र	आ	ई	ब	द
सा	–	निसा	रे	ग	रे	ग	–	रेग	रेसा	ग	म	ग	रे	सा	नि़
री	ऽ	नऽ	हिं	आ	ये	घ	न	श्या	ऽम	घि	र	आ	ई	ब	द
सा	–														
री	ऽ [3]														
X				0				x				0			

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत कजरी में उत्का नायिका (नायक के ना आने से चिन्तित) का अपने कृष्ण रूपी नायक के प्रति प्रेम परिलक्षित हो रहा है। उत्का नायिका बैठी सोच रही है कि मेरे कृष्ण रूपी नायक मेरे साथ नहीं है इसलिए मेरा स्थान सूना है। बादल घिर आये है पर प्रियतम नहीं आये है, सावन की फुहारें उत्का नायिका के अर्न्तमन को भिगों देते है। आम के वृक्ष बौर से लद गये है, मोर नाच रहे है और बादलों को पुकार रहे है। उत्का नायिका अपने प्रियतम को याद करके उसे उलाहना दे रही है कि ऐसा वो क्या करे कि जिससे उसके प्रियतम जोकि उसे भूल गये है और उसकी सौतन को लुभाने चले गये है, उसके निकट फिर से आ जाऐं ताकि वो अपने प्रियतम के साथ इस वर्षा ऋतु का आनन्द ले सके। इस प्रकार प्रस्तुत कजरी 'नहिं आये घनश्याम घिर आई बदरी' जैसे शब्दों से युक्त है जिसके द्वारा उत्का नायिका की तीव्र उत्कंठा व प्रतीक्षा व नायक के प्रति प्रेम भाव व उससे मिलने की इच्छा दर्शाई गई है जिससे वियोग श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हो रही है इसके साथ ही प्रकृति चित्रण को भी प्रधानता दी गई है जोकि कजरी की मुख्य विशेषता है। वहीं दूसरी ओर 'कान्हा हमें बिसराये' रहे सौतिन लुभायें जैसे शब्दों के प्रयोग द्वारा नायिका के विरह पक्ष भी उजागर कर रहा है जिससे वियोग श्रृंगाार रस की अभिव्यक्ति हो रही है।

रागानुसार रस

प्रस्तुत कजरी का गायन राग मिश्र पीलू में किया गया है। जैसा कि नाम से विदित होता है मिश्र पीलू अर्थात् राग पीलू में अन्य स्वरों का मिश्रण है प्रस्तुत कजरी में किया गया है। राग मिश्र पीलू एक ऐसा राग है जिसमें श्रृंगार के दोनों पक्षों को सहज ही अभिव्यक्त किया जा सकता है। प्रस्तुत कजरी में प्रयुक्त राग मिश्र पीलू के स्वरों के द्वारा भी श्रृंगार रस के वियोग पक्ष को ही उजागर किया गया है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव

प्रस्तुत कजरी में गिरिजा देवी स्वर एवं शब्दों को इतनी गहराई से समन्वित किया है कि प्रकृति चित्रण के साथ–साथ नायिका का प्रेम भाव बरबस ही आलोकित हो रहा है। स्वर और साहित्य के मिलने पर यहां पर स्वतः उत्का नायिका का अपने नायक से मिलने का भाव परिलक्षित हो रहा हैः–

– धऩि सा रे	गरे सारे गरे स	– नि़ सा नि़	ध़ नि़ निसा़ –
ऽ सोचे ब्र ज	वाऽ ऽऽ ऽऽ म	ऽ सो चे ऽ	ऽ ऽ ब्रज वा
– – – –	– – ग ग	– – ग म	गरे गरे नि़ सा
ऽ म ऽ ऽ	ऽ ऽ सू नो	ऽ ऽ सू नो	लाऽ गेऽ मे रो
सा ध़ प –	–नि़ नि़ सा– –	– नि़ सा रे	रेग ग– ग –
धा ऽ म ऽ	ऽमे रो धाऽ म	ऽ न हिं आ	ऽऽ ऽऽ ये ऽ
ग़ सा ग़ –	रेग़ रेग़ रेम ग़रे	सा – – ग	म ग रेसा़ नि
घ न श्या़ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽ म ऽ घे	रि आ इब़ द
सा – – –			
री ऽ ऽ ऽ			

अन्तरे में भी स्थायी भाव को प्रकृति के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। नायिका विविध स्वर संयोगों से सावन की प्रकृति चित्रण, पक्षियों की पुकार आदि के द्वारा अपना विरह व्यक्त कर रही है। प्रयुक्त स्वर–साहित्य के समन्वय द्वारा प्रकृति के चित्रण के साथ ही नायिका के इंतजार के भाव को दर्शाया गया हैः–

– – नि़ रे	सा नि़ नि़ साम़	ग – ग मग़	– – – सा
ऽ ऽ आ ऽ	ई ऽ सा व	की ऽ बौ ऽऽ	ऽ ऽ र ब
ग रे सा नि़	– – – –	– ग मग़ म	ग प– –– ––
हा ऽ र ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ बो लेऽ मो	र वाऽ ऽऽ ऽऽ
–– –– ध म	– ग – –	– – – नि़सा़	रे ग़ – –

ऽऽ	ऽऽ	पु	का	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	परे	ऽ	बूँ	दन	फु
–	–	–	–	रेग़	रेसा	सारे	सनि़	–	नि़	सा	–	–	––	–	नि़
हा	ऽ	ऽ	र	ऽऽ	ऽऽ	ऽप	ऽरे	ऽ	बूँ	द	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बूँ
साग	गरे	गम	ग	पध	पध	नि	रे	गरे	सा	ग	म	रे	ग	सा	नि़
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	द	नफुं	हाऽ	र	घि	र	आ	ई	ब	द
सा	–	––	–												
री	ऽ	ऽऽ	ऽ–												

यहाँ पर स्वर एवं शब्दों के संयोजन द्वारा गिरिजा देवी ने अन्य सम्भोग दुखिता नायिका (नायिका के साथ प्रेम करने वाली अन्य नायिका को देख दुखित होने वाली) के चिन्ता के भाव को इस प्रकार व्यक्त किया है:–

						नि़रे	सानि	–	सा	ग	रे	ग	म	–	ग
						कान्ह	हाऽ	ऽ	ऽ	ह	मे	बि	स	ऽ	रा
–	–	ग	म	ग	म	रेग	म	–	–	रे	सा	–	–	–	–
ये	ऽ	र	हे	सौ	ति	नऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	लु	भा	ऽ	ये	ऽ	ऽ
कौ	न	उ	पा	ऽ	ऽ	य	ऽ	ऽ	घि	ऽऽ	ऽर	आ	ई	ब	द
सा	–	––	–												
री	ऽ	ऽऽ	ऽ												

शैली पर ताल का प्रभाव :–

कजरी के अन्तर्गत दादरा और कहरवा ताल के अतिरिक्त दीपचंदी और अद्धातिताल का भी प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत कजरी ठुमरी अंग से प्रस्तुत की गई है। ठुमरी में अधिकतर अद्धातिताला ताल का प्रयोग भी देखा जाता है इसलिए प्रस्तुत कजरी में अद्धातिताला ताल का प्रयोग किया गया है और अन्त में चमत्कृत करने वाली लग्गी लड़ी का प्रयोग किया गया है।

'कजरी' गिरिजा देवी **ताल – कहरवा**

स्थाई:– अखियां भई घटा बरसाती

अन्तरा:– जब से श्याम परदेस सिधारे

बरसत है दिन राति घटा बरसाती

काजर रेख मनहुँ धन कारे

भृकुटि वंश धनुष यनु हारे

झपकत पलक पूतरी बिछि बिछि

जनु दामिनी बरसाती

अन्तराः–2 लेतहुँ साँस मनहुँ घन गहरे

असुँवन बूँद मेह जन छहरे

विरह अँधेरी मेमुरिया थाली रे

कछु नही डगर लगाती

अन्तराः–3 मन पुरबइया पवन सुडोले

पियु पियु कहत पपीहा बोले

प्रताप विरहिणी बोला

हरि बिन हम ना सोती

अंखियाँ .....

कजरी – अंखियां भई घटा बरसाती (ताल कहरवा)

पधनिसां निधप प ध नि सां – – सांधपम पधनिसां नि – सां – – धनि धप – धमप – ग म प म प

अँ खि या ऽ ऽ मऽ ऽ ई ऽ घ टा ऽ ऽ ब र सा ऽ ती

				नि	निध	निसां	रें	सां	धनि	धप	प	मप	ग	म
सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	अँ	खि	याँ ऽ	ऽ	ऽ	भऽ	ईऽ	घ	टाऽ	ब	र
प	मं	प	प	मं	प	ग	म	प	मं	प	–	–	ग	म	प
सा	ऽ	ती	घ	टा	ऽ	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	अँ	खि	या
प	म	प	–	प	मं	प	ध	म	–	ग	–	ग	म	रे	ग
भ	ई	ऽ	ऽ	घ	टा	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	घ	टा	ब	र
प	–	–	–	–	निनि	ध	निसां	धनि	धप	–	–	प	मंप	ग	म
सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	अँ	खि	याँ ऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	घ	टाऽ	ब	र
प	–	–	–		प	निनि	नि	नि़	नि़	सा	–	–	रे	सा	–
सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	अं	खिऽ	याँ	ऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	घ	ऽ	टा
नि	ध	प	मं	प	–	–	ध	म	प	ग	म	प	मं	प	–

ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	घ	टा	ऽ	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ
×				0				×				0			

अन्तरा–1

–	–	प	नि	–	–	नि	सं	–	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ज	ब	से	ऽ	श	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सं	रेंगं	रें	गंरें	सं	–	–	पनि	–	–	निसां	–	–
म	ऽ	ऽ	श्या	ऽऽ	ऽ	मऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जब	से	ऽ	श्या	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	धनि	ध	प	–	–	–	पनि	–	–
म	ऽ	प	र	दे	स	सि	धाऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जब	से	ऽ
–	–	–	–	सां	–	–	–	–	नि	सां	–	–	–	–	ग
ऽ	ऽ	श	या	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	प	र	दे	ऽ	ऽ	स	सि
रेंगं	रेंगं	रें	सं	–	नि	ध	प	–	पनि	नि	–	–	–	–	निप
घाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बर	स	त	ऽ	हैं	ऽ	दिन
सां	–	–	नि	ध	प	–	–	–	–	गग	मप	प	–	–	नि–
रा	ऽ	ऽ	ति	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बर	सत	है	ऽ	ऽ	दिन
ध	नि	ध	प	मं	प	म	ग	–	ग	ग	मप	–	धनि	सारें	गं
ऽ	रा	ऽ	ति	रा	ऽ	ऽ	ति	ऽ	ब	र	सत	है	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
सारें	नि	ध	प	–	–	–	ग	गम	–	ग	रे	प	–	–	–
दिन	रा	ऽ	ति	ऽ	ऽ	ऽ	ऽघ	टाऽ	ऽ	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ
–	नि	निध	निसां	प	मं	प	ध	मं	प	ग	म	प	मं	प	–
ऽ	अँ	खि	याँ	भ	ई	ऽ	घ	टा	ऽ	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ
×				0				×				0			

दादरा की लय –

–	म	–		–	ध	ध		ध	नि	सां		–	ध	–	
ऽ	का	ऽ		ऽ	ज	र		रे	ऽ	ऽ		ख	म	ऽ	
प	–	–		प	ध	–		म	–	–		ग	–	–	
न	हुँ	ऽ		घ	न	ऽ		का	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	
–	म	–		–	ध	ध		ध	नि	सां		–	ध	–	
ऽ	का	ऽ		ऽ	ज	र		रे	ऽ	ऽ		ख	म	ऽ	

प	–	–
न	हुँ	ऽ
–	म	–
ऽ	भृ	ऽ
प	–	–
नु	ष	ऽ
–	म	–
ऽ	भृ	ऽ
प	–	–
नु	ष	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
गं	रें	सां
ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–
छि	ऽ	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
नि	सं	–
ल	क	ऽ
सां	रें	गं
री	ऽ	ऽ
–	प	नि
ऽ	ज	नु
नि	सं	–
सा	ऽ	ऽ

×

प	ध	–
घ	न	ऽ
–	ध	ध
कु	ऽ	टि
प	ध	–
य	नु	ऽ
–	ध	ध
कु	ऽ	टि
प	ध	–
य	नु	ऽ
–	प	नि
ऽ	झ	प
नि	नि	–
प	ल	ऽ
सां	–	–
पू	त	ऽ
–	–	नि
ऽ	ऽ	बि
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
रें	गं	–
ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	दा
–	–	–
ऽ	ती	ऽ

0

म	–	–
का	ऽ	ऽ
ध	नि	सां
वं	ऽ	ऽ
म	–	–
हा	ऽ	ऽ
ध	नि	सां
वं	ऽ	ऽ
म	–	–
हा	ऽ	ऽ
नि	–	–
क	ऽ	त
सां	–	–
क	ऽ	ऽ
सां	रें	गं
ऽ	री	ऽ
सां	नि	सां
छि	ऽ	ऽ
–	प	नि
ऽ	झ	प
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
–	नि	सां
ऽ	बि	छि
–	–	–
ऽ	मि	नी

×

ग	–	–
रे	ऽ	ऽ
–	ध	–
श	ध	ऽ
ग	–	–
रे	ऽ	ऽ
–	ध	–
श	ध	ऽ
ग	–	–
रे	ऽ	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ
–	–	रें
ऽ	ऽ	ऽ
नि	ध	ऽ
ऽ	ऽ	बि
नि	–	–
क	ऽ	त
–	–	नि
ऽ	ऽ	प
–	सां	–
ऽ	पू	त
–	नि	सां
ऽ	बि	छि
नि	सां	रें
द	र	ऽ

0

कहरवे की लय–

				नि	निध	निसां	–	प	म	प	ध	म	प	ग	म
				अं	खि	याँ	ऽ	भ	ई	ऽ	घ	टा	ऽ	ब	र
प	म	प	–	नि	निध	निसां	–	प	म	प	ध	म	प	ग	म
सा	ऽ	ती	ऽ	अं	खि	याँ	ऽ	भ	ई	ऽ	घ	टा	ऽ	ब	र
प	म	प	–	नि	निध	निसां	–	प	म	प	ध	म	प	ग	म
सा	ऽ	ती	ऽ	अं	खि	याँ	ऽ	भ	ई	ऽ	घ	टा	ऽ	ब	र
प	म	प	–	प	ध	नि	रें	सां	नि	ध	नि	सां	–	–	–
सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	नि	सां	–	–	–	–	–	रें	गं	रें	सां	–	–	नि	सां
ऽ	अं	खि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ई
रें	नि	सां	नि	ध	प	म	प	धनि	धप	नि	नि	सां	नि	प	म
ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	घ	टा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	ऽ	म	प	नि	ध	प	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ब	र	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	म	प	ग	म	प	म	प	–	–	–	–	–	–	–	–
घ	टा	ऽ	ऽ	ब	र	ऽ	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ
×				0				×				0			

दादरे की लय–

–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	ले	ऽ	त	हुँ	ऽ	साँ	ऽ	ऽ	स	ऽ	म
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
न	हुँ	–	घ	न	ऽ	ग	ह	ऽ	रे	ऽ	ऽ
–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	ले	ऽ	त	हुँ	ऽ	साँ	ऽ	ऽ	स	ऽ	म
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
न	हुँ	–	घ	न	ऽ	ग	ह	ऽ	रे	ऽ	ऽ
–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	अ	सु	व	न	ऽ	बूँ	ऽ	ऽ	द	मे	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–

ह	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न	छ	ऽ	ह	रे	ऽ	ऽ
—	म	—	—	ध	ध	ध	नि	सां	—	ध	—
ऽ	अ	सु	व	न	ऽ	बूँ	ऽ	ऽ	द	मे	ऽ
प	—	—	प	ध	—	म	—	—	ग	—	—
ह	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न	छ	ऽ	ह	रे	ऽ	ऽ
—	—	—	—	—	—	—	—	—	प	नि	—
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वि	र	ऽ
—	—	—	—	—	—	—	सां	नि	नि	सां	—
ह	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अँ	धे	ऽ	ऽ	ऽ
—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
—	—	सां	रें	गं	रें	गं	रें	—	सां	—	—
ऽ	ऽ	मे	मु	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ
—	—	—	—	—	—	नि	सां	नि	ध	प	—
ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
—	—	—	—	—	—						
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
×			0			×			0		

कहरवे की लय —

प	नि	—	—	—	—	सां	रें	नि	ध	प	—	नि	(निध)	(निसां)	—
क	छु	न	हिं	ड	ग	र	ल	गा	ऽ	ती	ऽ	अं	(खिऽ)	(याँऽ)	ऽ
प	म॑	प	—	ध	(म॑प)	ग	म	प	म॑	प	—	नि	(निध)	(निसां)	—
भ	ई	ऽ	ऽ	घ	(टाऽ)	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	अं	(खिऽ)	(याँऽ)	ऽ
प	म॑	प	—	ध	(म॑प)	ग	म	प	म॑	प	—	नि	(निध)	(निसां)	—
भ	ई	ऽ	ऽ	घ	(टाऽ)	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	अं	(खिऽ)	(याँऽ)	ऽ
प	म॑	प	—	ध	(म॑प)	ग	म	प	म॑	प	—	नि	(निध)	(निसां)	—
भ	ई	ऽ	ऽ	घ	(टाऽ)	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	अं	(खिऽ)	(याँऽ)	ऽ
प	म॑	प	—	ध	(म॑प)	ग	म	प	म॑	प	—	नि	(निध)	(निसां)	—
भ	ई	ऽ	ऽ	घ	(टाऽ)	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	अं	(खिऽ)	(याँऽ)	ऽ
प	म॑	प	—	ध	(म॑प)	ग	म	प	म॑	—	—	—	—	प	—
भ	ई	ऽ	ऽ	घ	(टाऽ)	ब	र	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ती	ऽ

–	–	–	–	–	–	ग	म	प	म॑	प	–	–	प	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	अं	खि	ऽ
म॑	प	ध	म॑	प	–	म	रे	प	–	म	रे	ध	–	प	–
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अं	खि	यां	ऽ	अ	खि	ऽ	ऽ	या	ऽ
–	–	नि	–	–	–	–	–	–	–	नि	सां	–	–	सां	रें
ऽ	ऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	घ	टा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	मं	पं	मं	गं	रें	सां	नि	सां	गं	रें	सां	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	र	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ती	ऽ
–	–	नि	प	नि	सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	सां	–	निध	प–	मप	धनि	सां–	––	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	र	साऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ती	ऽ
–	–	–	–	–	–	निसां	रेंसां	निसां	निध	मप	धनि	सां–	––	––	––
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
सां	नि	ध	प	–	–	–	–	म॑	प	ग	म	प	–	–	–
सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	टा	ऽ	ब	ऽ	र	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	ग	म	–	–	ध	–
सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	न	ऽ	ऽ	पु	र
–	–	–	–	ध	नि	ध	नि	सां	–	नि	ध	प	–	–	–
ऽ	ऽ	पु	र	ब	इ	या	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				0				×				0			

दादरे की लय –

म	म	–	ध	ध	–	ध	नि	सां	–	ध	–
म	न	ऽ	पु	र	ऽ	ब	ई	ऽ	यां	ऽ	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
ऽ	प	व	न	सु	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
म	म	–	ध	ध	–	ध	नि	सां	–	ध	–
म	न	ऽ	पु	र	ऽ	ब	इ	ऽ	यां	ऽ	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
ऽ	प	व	न	सु	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ

–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	पि	यु	ऽ	पि	यु	क	ह	ऽ	त	प	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
पी	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	पि	यु	ऽ	पि	यु	क	ह	ऽ	त	प	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
पी	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
–	–	–	–	प	नि	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	सं	–	रे	ग	रे	ग	रे	स	नि	सां	–
प्र	त	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–		सां	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वि	र	ऽ	ऽ	हि
–	–	–	–	–	–	–	–	नि	सां	नि	ध
णी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	ल	ऽ
प	–	–	–	–	–	–	–	–	–	रें	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ
सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–	नि	सां
वि	र	ऽ	ऽ	हि	णी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ
नि	ध	प									
ला	ऽ	ऽ									
×			0			×			0		

कहरवे की लय –

नि	–	–	–	–	–	–	नि	सां	–	–	–	–	–	–	–
ह	रि	बि	न	ह	म	ना	ऽ	सो	ऽ	ती	ऽ	ऽ	अं	खि	यां
प	मे	प	ध	मे	प	ग	म	प	मे	प	–				

भ ई ऽ घ | टा ऽ ब र | सा ऽ ती ऽ[4] |

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत कजरी में प्रोषितपतिका नायिका (जिसका नायक परदेस चला गया हो) की विरहावस्था का बड़ा ही मनोहारी रूप में वर्णन किया है। प्रोषितपतिका नायिका के नयनों से आंसू इस प्रकार बह रहे है जैसे आकाश से वर्षा गिरती है। जब से नायक नायिका को छोड़कर गया है तब से ये नयन दिन रात बरसते रहते है। नयनों में काजल की रेखा काले–काले बादल जैसी प्रतीत हो रही है और भौहों की आकृति बिल्कुल धनुष जैसी हो गई है। नयन पलक तो झपकते है परन्तु पुतलियाँ इंतजार में स्थिर हो गई है। बिजली कड़क रही है। सांसे चल रही है, परन्तु मन गहरे अंधकार में डूबा रहता है। आंसुओं की बूंदे मेघों की भाँति तन को भिगो रही है। विरह का अंधकार इतना गहरा है कि कोई भी राह सुझाई नहीं देती। मन पूर्व के पवन की भाँति हिल्लोलें ले रहा है। पपीहा पिहु पिहु बोल रहा है, प्रत्येक दिशा में नायिका को सब अपने जैसा ही प्रतीत हो रहा है, नायक के बिना नायिका न तो रात भर सोती है, न ही किसी प्रकार भी चैन पाती है। इस प्रकार प्रस्तुत कजरी में प्रयुक्त शब्दों के माध्यम से ऋतु के वर्णन के साथ–साथ नायिका के विरह भावना को दर्शाया गया है उदाहरणस्वरूप– 'अंखियां भई घटा बरसाती दिन रात'। जिसके द्वारा स्वतः ही वियोग श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हो रही है।

स्वरानुसार रस

कजरी विधा भी एक लोकविधा है इसलिए अधिकतर कजरी विधा के गायन हेतु भी किसी विशेष राग का चयन नहीं किया जाता है। प्रस्तुत कजरी का गायन भी किसी विशेष राग में नहीं किया गया है। प्रस्तुत कजरी में प्रयोग की जाने वाली स्वरावलियों एवं स्वरों के प्रयोग द्वारा श्रृंगार रस के वियोग पक्ष का वर्णन किया जा रहा है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव

प्रस्तुत कजरी में गिरिजा देवी ने वर्षा ऋतु सम्बन्धी शब्दों के साथ स्वरों को इस प्रकार समन्वित किया है जिसके द्वारा नायिका का विरह भाव इस प्रकार दर्शाया गया है:–

				–	नि	निध	निसां	रें	सां	धनि	धप	प	मप	ग	म
				ऽ	अँ	खिऽ	यांऽ	ऽ	ऽ	भऽ	ईऽ	घ	टाऽ	ब	र
प	म	प	प	–	निनि	ध	निसां	धनि	धप	–	–	प	मप	ग	म
सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	अँऽ	खि	याँऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	घ	टाऽ	ब	र
प	म	प	प	–	प	निनि	नि	नि	नि	सां	–	–	रे	सा	–
सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	अं	खिऽ	याँ	ऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	घ	ऽ	टा
नि	ध	प	म	प	–	–	–								
ब	र	सा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ								

यहां पर गिरिजा देवी ने स्वर एवं साहित्य के समन्वय द्वारा बड़ी ही खूबसूरती से एक प्रोषितपतिका नायिका का वर्णन किया है जिसके द्वारा उसके विरह के भाव को इस प्रकार व्यक्त किया गया है:–

												–	पनि	–	–
												ऽ	जब	से	ऽ
–	–	–	–	सां	–	–	–	–	नि	सां	–	–	–	–	ग
ऽ	ऽ	श	या	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	प	र	दे	ऽ	ऽ	स	सि
रेंगं	रेंगं	रें	सां	–	नि	ध	प	–	पनि	नि	–	–	–	–	निप
धाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बर	स	त	ऽ	है	ऽ	दिन
सां	–	–	नि	ध	प	–	–								
रा	ऽ	ऽ	ति	ऽ	हो	ऽ	ऽ								

यहां पर जैसे–जैसे कारे बादल छा रहे है वैसे–वैसे नायिका का इंतजार बढ़ता जा रहा है। नायिका के इस प्रेम के भाव को गिरिजा देवी ने स्वर और साहित्य के लगाव द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्त किया है:–

–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	का	ऽ	ऽ	ज	र	रे	ऽ	ऽ	ख	म	ऽ

प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
न	हुँ	ऽ	घ	न	ऽ	का	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	भृ	ऽ	कु	ऽ	टि	वं	ऽ	ऽ	श	ध	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
नु	ष	ऽ	य	नु	ऽ	हा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
–	–	–	–	प	नि	नि	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	झ	प	क	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	नि	नि	–	सां	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	प	ल	ऽ	क	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सां	–	–	सां	रें	गं	–	–	रें
ऽ	ऽ	ऽ	पू	त	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	रें	सां	–	–	नि	सां	नि	सां	नि	ध	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बि	छि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बि
प	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
छि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	प	नि	–	–	–	–	–	–	नि	सां	रें
ऽ	ज	नु	ऽ	ऽ	दा	ऽ	मि	नी	द	र	ऽ
नि	सां	–	–	–	–						
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ती	ऽ						

यहां पर नायिका के विरह भाव को स्वर–साहित्य के समन्वय द्वारा प्रदर्शित किया गया है:–

–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	ले	ऽ	त	हुँ	ऽ	साँ	ऽ	ऽ	स	ऽ	म
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
न	हुँ	ऽ	घ	न	ऽ	ग	ह	ऽ	रे	ऽ	ऽ
–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	अ	सु	व	न	ऽ	बूँ	ऽ	ऽ	द	मे	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
ह	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न	छ	ऽ	ह	रे	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	प	नि	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वि	र	ऽ

–	–	–	–	–	–	–	सां	नि	नि	सां	–
ह	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	सां	रें	गं	रें	गं	रें	–	सां	–	–
ऽ	ऽ	मे	मु	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	नि	सां	नि	ध	प	–
ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–									
रे	ऽ	ऽ									
प	नि	–	–	–	–	सां	रें	नि	ध	प	–
क	छु	न	हिं	ऽ	ग	र	ल	गा	ऽ	ती	ऽ

यहाँ पर नायिका के प्रेम भाव को गिरिजा देवी ने स्वरों और शब्दों के संयोजन से इस प्रकार व्यक्त किया है:–

म	म	–	ध	ध	–	ध	नि	सां	–	ध	–
म	न	ऽ	पु	र	ऽ	ब	इ	ऽ	यां	ऽ	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
ऽ	प	व	न	सु	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
–	म	–	–	ध	ध	ध	नि	सां	–	ध	–
ऽ	पि	यु	ऽ	पि	यु	क	ह	ऽ	त	प	ऽ
प	–	–	प	ध	–	म	–	–	ग	–	–
पी	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
–	–	–	–	प	नि	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	सां	–	रे	ग	रे	ग	रे	सा	नि	सां	–
प्र	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	सां	–	–	–	–

ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	वि	र		ऽ	ऽ	हि
–	–	–		–	–	–		–	–	नि		सां	नि	ध
णी	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	बा		ऽ	ला	ऽ

नि	–	–	–		–	–	–	नि		सां	–	–	–	
ह	रि	बि	न		ह	म	ना	ऽ		सो	ऽ	ती	ऽ	

शैली पर ताल का प्रभाव

कजरी विधा का गायन अधिकतर कहरवा और दादरा ताल में किया जाता है। प्रस्तुत कजरी में शब्दों के अनुरूप कहरवा और दादरा दोनों ही तालों का प्रयोग किया गया है।

चैती

भारतीय संस्कृति के अनुसार होलिका पर्व के पश्चात् 'चैत्र' माह का आरम्भ होता है तथा इस विधा का रसास्वादन विशेष रूप से इसी महीने में ही लिया जाता है। अधिकांशतः इन गीतों में ऋतु वर्णन के साथ विरह की स्पष्ट झलक दिखाई देती है तथा साहित्य में भगवान राम का स्मरण निहित होता है। इन गीतों की धुनों में कुछ राग विशेष के स्वरों का मिश्रण होता है तथा विविध आयामों द्वारा इनमें सौन्दर्य का संचार किया जाता है। अधिकांशतः ये धुनें काफी, पहाड़ी, पीलू आदि रागों पर आधारित होती है। इसलिए इनकी गणना उपशास्त्रीय संगीत के अर्न्तगत भी की जा सकती है। इस विधा का निर्वहन दीपचंदी, अद्धा तिताला एवं कहरवा तालों में बहुतायत से होता है।

'चैती' गिरिजा देवी **ताल – दीपचंदी**

स्थाई :– चैत मास चुनरी रंगइवे हो रामा

पिया घर अई है

अन्तर –1 प्रीत रंग लहंगा, सो दूजे रंग चोलिया

लाल रंग चुनरी रंगइवे हो रामा

पिया घर अई है

राजा हम चुनरी रंगइवे हो रामा

चैत मास चुनरी रंगइवे

अन्तरा–2 कर श्रृंगार अंगन भई थाड़ी

हंस–हंस पिया को रिझैइवे हो रामा

पिया घर अई है

स्थाई:–

प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग	रे	ग	ग	म	गरे	गरे	सा
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	चु	न	ऽ	री	रं	ऽऽ	गऽ	ई
नि़	–	सा	म	ग	रे	स	–	सा	ग	रेग	सानि	धनि	धप
वे	हो	रा	ऽ	मा	ऽ	पि	या	घ	ऽ	रऽ	अऽ	इऽ	हैऽ

प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	हो	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	सा	ग	रे	ग	सा	नि़	–	ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	अ	इ	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ग	ग	म	–	–	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	स	साग	गप	ध	प	म	ग	–
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	हो	राऽ	ऽऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–	निसा	नि़	ध़	प	–	–	–
पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	अऽ	ई	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
प़	धसा	–	–	–	–	–	–	नि़	सानि	ध़	–	प	–
पि	याऽ	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	ऽ	अ	ईऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ

प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	हो	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	सा	ग	रे	ग	सा	नि़	–	ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	अ	इ	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	हो	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	हो	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	सा	ग	रे	ग	सा	नि़	–	ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	अ	इ	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	हो	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	नि़	सा	नि़	सा	–	–	–	–	–	–	रे	ग
ऽ	ऽ	चै	ऽ	त	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	ग	रे	सा	–	–	–	–	–	–	–	–	सा	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ए	री
–	–	–	रे	सा	ग	म	म	–	–	–	–	–	–
चु	न	री	रं	ग	ई	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	रेग	रे	सा	रेसा	सा	–	निसा़	नि़	सा	रे	–	–	–
हो	राऽ	ऽ	ऽ	माऽ	हो	ऽ	राऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	गरे	स	रे	ग	–	रे	सा	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	होऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	मा
–	–	–	–	–	सा	–	–	–	–	नि़	सा	नि़	ध़

ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	पि	या		घ	ऽ	र		अ	इ	है	ऽ
प़	–	–		–	–	–	नि़		ध़	सारे	गरे		सा–	रे	–	सा
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	पि		या	ऽऽ	ऽऽ		ऽऽ	घ	ऽ	र
नि़	सा	ध़		प़	–	–	–		म	ग	–		–	–	–	–
अ	ई	है		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		पि	या	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग़	–	–		ग	प	ग	रे		सा	ग	रे		–	सा	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		घ	र	ऽ	ऽ		अ	ई	ऽ		है	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–		ग	–	म	प		–	–	प		म	ग	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ		पि	या	ऽ	ऽ		घ	र	अ		ई	है	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	–	–		ग	–	–		–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		पि	या	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	प	ध		प	म	ग	रे		सा	–	–		सा	–	नि़ध़	प़
घ	र	अ		इ	है	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽऽ	ऽ
प़	–	ध़		ध़	सा	–	ग		ग	रे	–		ग	–	म	–
चै	ऽ	त		मा	ऽ	स	ऽ		चु	न	ऽ		री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	रेग	प–		ग	रे	सा	–
ग	इ	ऽ		वे	ऽ	ऽ	हो		रा	ऽऽ	ऽऽ		ऽ	ऽ	मा	ऽ
प़	–	ध़		ध़	सा	–	ग		ग	रे	–		ग	–	म	–
चै	ऽ	त		मा	ऽ	स	ऽ		चु	न	ऽ		री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	रेग	प–		ग	रे	सा	–
ग	इ	ऽ		वे	ऽ	ऽ	हो		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		सा	ग	रे	ग		सा	नि़	–		ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ		घ	ऽ	ऽ	र		अ	इ	ऽ		है	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ध़		ध़	सा	–	ग		ग	रे	–		ग	–	म	–
चै	ऽ	त		मा	ऽ	स	ऽ		चु	न	ऽ		री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	रेग	प–		ग	रे	सा	–
ग	इ	ऽ		वे	ऽ	ऽ	हो		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		सा	ग	रे	ग		सा	नि़	–		ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ		घ	ऽ	ऽ	र		अ	इ	ऽ		है	ऽ	ऽ	ऽ
––	म	–		–	–	–	–		–	–	प		–	–	–	म
ऽऽ	चै	त		मा	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	स		ऽ	ऽ	ऽ	चु

प	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	
द	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
—	—	—	—	—	—	—	म	—	ग	—	—	—	—		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रं	ग	इ	वे	ऽ	ऽ	ऽ		
—	—	—	ग	—	—	—	—	म	पम	प	ध	प	—		
ऽ	ऽ	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	गई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
ध	प	म	ग	—	—	रे	—	सा	—	—	—	—	—		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
—	—	ग	—	—	रे	ग	रेग	रेसा	—	—	—	—	—		
ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	घ	र	अऽ	इऽ	ऽ	है	ऽ	हो	ऽ		
—	—	ग—	रे	ग	रे	ग	म	—	—	—	—	—	ग		
ऽ	ऽ	हांऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग		
म	ग	म	रे	ग	रे	सा	—	—	—	—	—	—	—		
या	घ	र	अ	इ	ऽ	है	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
ग	म	प	म	ग	—	—	सा	प़	ध़	—	—	—	—		
हो	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	ऽ	घ	र	ऽ	अ	इ	हे	रे		
—	—	—	ध़	नि़	सा	नि़	ध़	नि़ं	ध	—	—	—	—		
ऽ	ऽ	ऽ	घ	र	अ	ई	है	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ		
ग	म	—	रे	ग	रे	स	—	—	—	—	—	—			
घ	र	ऽ	अ	इ	है	ऽ	रे	ऽ	ऽ	अ	इ	है	ऽ		
प़	ध़	—	ध़	सा	—	ग	सारे	गरे	सारे	ग—	——	ग—	——		
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चुऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	नऽ	ऽऽ		
—	—	—	—	—	रे	गरे	सा	रे	—	—	—	—	—		
री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रं	गइ	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ	रा	मा		
प़	—	ध़	ध़	सा	—	ग	ग	रे	—	ग	—	म	—		
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ		
ग	रे	सा	नि़	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—		
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
—	—	—	—	सा	रेग	प—	—	—	—	—	—	—	—		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
ध	प	—	ध	प	म	ग	—	—	—	—	—	—	—		

ऽ	ऽ	मा		ऽ	ऽ	ऽ	हो		ऽ	रे	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–		–	प	–	–		–	–	–		–	प	म	ग
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	पि	या	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	घ	र	ऽ
रे	सा	–		–	–	प	–		ग	–	रेसा		–	–	–	–
अ	इ	ऽ		है	ऽ	हो	ऽ		घ	र	अई		है	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रे	ग		–	ग	–	रे		रेग	पम	ग–		–	–	–	–
पि	या	घ		र	अ	ई	है		ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	प	मप		ध	–	प		–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	अ	ईऽ		है	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	रे
–	–	–		–	–	–	–		–	ग	प		–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	पि	या		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	रे		सा	–	–	–		–	रेसा	–		प	म	ग	–
ऽ	ऽ	घ		र	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	अई	है		अ	ई	है	ऽ
ग	–	–		ध़	सा	–	ग		ग	रे	–		ग	–	म	–
चै	ऽ	त		मा	ऽ	स	ऽ		चु	न	ऽ		री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	रेसा	रेग		गम	ग–	मप	म
ग	इ	ऽ		वे	ऽ	ऽ	हो		रा	ऽऽ	ऽऽ		ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	मा
प़	–	ध़		ध़	सा	–	ग		–	–	–		–	–	–	–
चै	ऽ	त		मा	ऽ	स	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	–	–		म	ग	रे	–
ऽ	ऽ	रं		ग	इ	वे	हो		रा	ऽ	मा		रे	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ध़		ध़	सा	–	ग		ग	रे	–		ग	–	म	–
चै	ऽ	त		मा	ऽ	स	ऽ		चु	न	ऽ		री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	–	–		म	ग	रे	–
ऽ	ग	ई		वे	हो	रा	मा		रा	मा	ऽ		रे	ऽ	रा	मा
प़	–	ध़		ध़	सा	–	ग		ग	रे	–		ग	–	म	–
चै	ऽ	त		मा	ऽ	स	ऽ		चु	न	ऽ		री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	–	–		म	ग	रे	–
ग	ई	ऽ		वे	ऽ	ऽ	हो		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		सा	ग	रे	ग		सा	नि़	–		ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ		घ	ऽ	र	ऽ		अ	ई	ऽ		है	ऽ	ऽ	ऽ

सा	–	–		सा	ग	रे	ग		सा	नि़	–		ध़	नि़	ध़	प़
हो	पि	या		घ	ऽ	र	ऽ		अ	ई	ऽ		है	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा – 1

सा	–	–		प	ग	म॑	प		प	–	–		–	–	–	प
प्री	त	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ		ल	हँ	ऽ		गा	ऽ	ऽ	सो
म॑	ग	–		प	म॑	ध	–		प	–	ग		–	–	–	–
दू	जे	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ		चो	लि	ऽ		याँ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		प	ग	म॑	प		प	–	–		–	–	–	प
प्री	त	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ		ल	हँ	ऽ		गा	ऽ	ऽ	सो
म॑	ग	–		प	म॑	ध	–		प	–	ग		–	–	–	–
दू	जे	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ		चो	लि	ऽ		याँ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		प	ग	म॑	प		प	–	–		–	–	–	–
प्री	त	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ		ल	हँ	ऽ		गा	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	–	–		–	–	–		ग	–	प	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ल	हँ	ऽ	ऽ
–	–	–		गम॑	पध	निध	प–		म॑	प	–		–	–	–	–
गा	ऽ	ऽ		ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	म॑	प		ग	म॑	–	–		ग	म॑	प		–	–	–	–
स	दू	जे		रं	ऽ	ग	ऽ		चो	लि	ऽ		याँ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		प	ग	म॑	प		प	–	–		–	–	–	प
प्री	त	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ		ल	हँ	ऽ		गा	ऽ	ऽ	सो
म॑	ग	–		प	म॑	ध	–		प	–	ग		–	–	–	–
दू	जे	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ		चो	लि	ऽ		या	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	ग		–	–	–	–		रे	ग	म॑		ग	–	–	म
ला	ऽ	ल		रं	ऽ	ग	ऽ		चु	न	ऽ		री	ऽ	ऽ	रं
रेग	रेग	सानि		नि़	–	–	–		सा	–	–		म	ग	रे	–
ऽऽ	गऽ	ईऽ		ऽ	वे	ऽ	हो		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–		–	–	–	–		–	–	–		–	–	–	–
ला	ल	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	रेसा	धसा		रेग	मग	––	–		ग	–	–		–	–	–	रे

ला	ऽऽ	ऽऽ		ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ल	रं	ग	चु		न	री	ऽ	रे
ग	–	–		–	–	–	–	–	–	–		प	–	–	–
ला	ल	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ	चु	न	ऽ		री	ऽ	ऽ	रं
ग	रे	सा		–	–	सा	नि़	नि़	–	सा		रे	–	–	–
ग	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	गम		प	–	–	–	म	प	म		प	–	–	प
हो	ऽ	लाऽ		ल	ऽ	रं	ग	चु	न	ऽ		री	ऽ	ऽ	रं
म	प	–		–	–	ग	–	म	ग	रे		सा	–	–	–
ग	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ	रा	मा	ऽ		रे	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–		–	–	–	–	ग	रे	–		प	–	ग	रे
ला	ल	ऽ		रं	ऽ	ग	ऽ	चु	न	ऽ		री	ऽ	रं	ऽऽ
ग	रे	–		सा	–	नि़	–	नि़	सा	नि़		सा	ग	–	रे
ग	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	–	नि़	सा	नि़		ध़	प़	–	–
पि	या	ऽ		घ	ऽ	ऽ	र	अ	ई	ऽ		है	ऽ	ऽ	ऽ
रे	सा	–		–	–	–	–	नि़	सा	नि़		ध़	–	प़	–
हो	पि	या		घ	ऽ	ऽ	र	अ	ई	ऽ		है	ऽ	ऽ	ऽ
×				2				0				3			

कहरवे की लय–

प़	ध़	सा	सा		ग	रे	ग	म	ग	–	रे	सा		नि़	सा	ग	रे
रा	जा	ह	म		चु	न	री	रं	ग	ई	वे	ऽ		हो	ऽ	रा	मा
सा	–	–	–		–	–	नि़	ध़	सा	–	–	–		–	–	–	–
चै	त	मा	स		चु	न	री	रं	ग	इ	वे	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	रे
प़	ध़	सा	सा		ग	रे	ग	म	ग	रे	–	सा		निसा	नि़	ग–	–रे
चै	त	मा	स		चु	न	री	रं	ग	इ	वे	हो		राऽ	ऽ	माऽ	ऽऽ
सा	–	रे	ग		सा	–	निध़	प़	प़	ध़	सा	सा		ग	रे	ग	म
पि	या	घ	र		अ	ई	हैऽ	ऽ	चै	त	मा	स		चु	न	री	रं
ग	रे	–	सा		निसा	नि़	ग–	–रे	सा	–	रे	ग		सा	–	निध़	प़
ग	इ	वे	हो		रा	ऽ	मा	ऽ	पि	या	घ	र		अ	ई	है	ऽ
×					0				×					0			

दीपचंदी–

ग	रे	सा	नि़	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ग	ई	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	सा	ग	रे	ग	सा	नि़	–	ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	अ	ई	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ध	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	त	ऽ	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ग	ई	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	सा	ग	रे	ग	सा	नि़	–	ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	अ	ई	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	सा	ग	–	प	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चै	त	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	म॑प	म॑प	गरे	–	ग	ग	म॑	प	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	म	–	म॑	प	–	ग	म
सी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चु	न	री	रं	ऽ	ग	म
ग	–	–	–	–	–	–	म	ध	–	नि	निध	प	–
वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽऽ	रं	ऽ
ग	म	–	ग	–	–	–	ग	–	–	–	–	म	–
ग	ई	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	सा	–	नि़	सा	नि़	सा	गरे	म	–
ग	ई	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽऽ	हो	ऽ
प	म	प	ग	–	म	ग	–	–	–	–	–	सा	–
रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ
नि	सा	नि	सा	ग	–	रे	म॑	प	म	–	ग	–	–
रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ
रे	ग	रे	सा	नि़	–	–	प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग
अ	ई	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	चै	त	ऽ	मा	ऽ	स	ऽ
ग	रे	–	ग	–	म	–	ग	रे	सा	नि़	–	–	–
चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ	ग	इ	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ

सा	रेग	मप	–	–	–	–	सा	नि़	–	रे	–	सा	–
रा	ऽऽ	ऽऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ
नि़	सा	नि़	ध	–	प	–	–	–	–	–	–	–	–
अ	ई	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	सा	रेग	म॑–	प–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हाँ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
म	–	–	म	–	प	ध	–	म	प	–	–	–	–
क	र	–	श्रृं	ऽ	गा	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	म	–	म	प	म	प	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	अं	ग	न	ऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	म	पध	नि–	ध–	प–	म–	ग–	ग–	म–	ध–	प–	म–	ग–
ऽ	या	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
–	रे–	रे	सा	–	–	–	म॑	प	म॑	ग	म॑	प	–
री	रं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	र	ऽ	श्रृं	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–	–	–	–	–	–	–	–	म॑	–	–	म॑
गा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	र	ऽ	श्रृं
प	ध	–	–	–	–	–	–	–	म	–	–	ग	रे
गा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अँ	ग	न	भ	ई
सा	नि़	प	–	–	–	–	–	–	–	–	म	ग	–
ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ड़ी	रे	ऽ
–	सा	ग	म	–	–	–	–	सा	रे	ग	रे	ग	प
ऽ	अँ	ग	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	ग	–	–	–	–	म	–	ग	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ई	ऽ	था	ड़ी	रे	ऽ
म	–	–	म॑	–	प	ध	–	म॑	प	–	–	–	–
क	र	ऽ	श्रृं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म॑	ग	प	म॑	–	–	प	–	–	–	–	–	–	–
ऐ	ऽ	ऽ	क	र	ऽ	श्रृं	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म॑	ग	प	–	–	म॑	प	ध	–	प	म॑	प	म॑	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म॑	–	ग	–	–	–	–	ग	मध	––	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	ऽऽ	ऽऽ	क	र	ऽ	श्रृं

नि	ध	नि	ध	–	म	प	प	ध	–	प	–	–	–
गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	ग	मपध
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	ऽऽऽ
ध	–	–	–	–	नि	ध	नि	ध	नि	ध	–	प	–
क	र	ऽ	श्रृं	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	मध	–	प	म	ग	–	रे	ग	रे	–	सा	–	–
ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	म	प	–	–	प	ध	–	–	म	प	–
क	र	ऽ	श्रृं	ऽ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	मप	म	–	प	स	नि़	प़	–	म	–	ग	–
अं	ग	न–	भ	ऽ	ई	ऽ	था	ऽ	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	ऽ
–	गम	पध	––	ध–	ध–	पध	ग	म	प	ध	प	ध	–
ऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	अंग	नऽ	भई	था	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	–	प	म	ग	–	–	ग	म	–	–	ध	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	ग	म	ध	–	प	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	म	प	–	–	प	ध	–	–	म	प	–
क	र	ऽ	श्रृं	ऽ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	मप	म	–	प	स	नि़	प़	–	म	–	ग	–
अं	ग	न–	भ	ऽ	ई	ऽ	था	ऽ	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	ऽ
–	गम	पध	––	ध–	ध–	पध	ग	म	प	ध	प	ध	–
ऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	अंग	नऽ	भई	था	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	–	प	म	ग	–	–	ग	म	–	–	ध	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	ग	म	ध	–	प	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	म	प	–	–	प	ध	–	–	म	प	–
क	र	ऽ	श्रृं	ऽ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	मप	म	–	प	स	नि़	प़	–	म	–	ग	–

अं	ग	न–	भ	ऽ	ई	ऽ	था	ऽ	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–	ऩिसा	ऩि	ग–	–रे	ग	रे	–	ग	–	म	–
हँ	स	ऽ	हँ	ऽ	स	ऽ	पि	या	ऽ	को	ऽ	रि	ऽ
ग	रे	सा	ऩि	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
झै	ऽ	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
–	गरे	सा–	–	सा	–	रे	सा	–	–	ग	–	–	–
हँ	ऽऽ	ऽऽ	स	हँ	ऽ	स	हँ	स	ऽ	हँ	ऽ	स	ऽ
सा	ग	–	रे	–	ग	–	ग	–	–	ग	–	–	–
हँ	स	ऽ	हँ	ऽ	स	ऽ	हँ	स	ऽ	हँ	ऽ	स	ऽ
ग	रे	–	ग	–	म	–	रे	गम	गम	प–	मप	ध–	प–
पि	या	ऽ	को	ऽ	रि	ऽ	झै	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
ग	रे	सा	ऩि	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ऩि	–	रे	–	सा	–	सा	ग	–	ग	–	–	–
हँ	स	ऽ	हँ	ऽ	स	ऽ	हँ	स	ऽ	हँ	ऽ	स	ऽ
ग	रे	–	ग	–	म	–	रे	गम	गम	प–	मप	ध–	प–
पि	या	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽ	रि	झै	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ध	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
हँ	स	ऽ	हँ	ऽ	स	ऽ	पि	या	ऽ	को	ऽ	रि	ऽ
ग	रे	सा	ऩि	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
झै	ऽ	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	रे	–	ग	–	म	–	रे	गम	गम	प–	मप	ध–	प–
पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	अ	ई	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
x			2				0			3			

कहरवे की लय–

प़	ध़	सा	सा	ग	रे	ग	म	ग	रे	–	सा	ऩिसा	ऩि	ग–	रे–
चै	त	मा	स	चु	न	री	रं	ग	इ	वे	हो	रा	ऽ	मा	ऽ
प़	ध़	सा	सा	ग	रे	ग	म	ग	रे	–	सा	ऩिसा	ऩि	ग–	रे–
चै	त	मा	स	चु	न	री	रं	ग	इ	वे	हो	रा	ऽ	मा	ऽ
प़	ध़	सा	सा	ग	रे	ग	म	ग	रे	–	सा	ऩिसा	ऩि	ग–	रे–
चै	त	मा	स	चु	न	री	रं	ग	इ	वे	हो	रा	ऽ	मा	ऽ

प़	ध़	सा	सा	ग	रे	ग	म	ग	रे	–	सा	नि़सा	नि़	ग–	रे–
चै	त	मा	स	चु	न	री	रं	ग	इ	वे	हो	रा	ऽ	मा	ऽ
प़	ध़	सा	सा	ग	रे	ग	म	ग	रे	–	सा	नि़सा	नि़	ग–	रे–
चै	त	मा	स	चु	न	री	रं	ग	इ	वे	हो	रा	ऽ	मा	ऽ
X				0				X				0			

दीपचंदी की लय–

प़	–	ध़		ध़	सा	–	ग		ग	रे	–		ग	–	म	–
चै	त	ऽ		मा	ऽ	स	ऽ		चु	न	ऽ		री	ऽ	रं	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	–	–		म	ग	रे	–
ग	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		सा	ग	रे	ग		सा	नि़	–		ध	नि़	ध़	प़
थ्प	या	ऽ		घ	ऽ	र	ऽ		अ	ई	ऽ		है	ऽ	ऽ	ऽ[5]
X				2					0				3			

साहित्यानुसार भाव व रस

होलिका पर्व के पश्चात् चैत्र माह में चैती विधा का गायन किया जाता है। चैत्र मास में वासकलज्जा नायिका (नायक के आने से पूर्व श्रृंगार करने वाली) अपने नायक के घर आने की खुशी में अपनी प्रसन्नता के भाव को अभिव्यक्त कर रही है। चैत मास में अपने प्रियतम के घर आने पर वासकलज्जा नायिका अपनी चुनरी को रंगाने की खुशी का इजहार कर रही है। वासकलज्जा नायिका प्रीत रंग में ही अपना लंहगा रंगना चाहती है और दूसरे रंग में चोली इसके साथ ही वासकलज्जा नायिका अपनी चुनरी को भी पिया के रंग में ही रंगना चाहती है। नायिका अपने प्रियतम के आगमन की खुशी में अतनी आकुलित है कि श्रृंगार करके आंगन में खड़ी है और अपनी प्रीत को बढ़ाने के लिए हंस–हंस कर अपने प्रियतम को रिझाना चाहती है। इस प्रकार प्रस्तुत चैती में प्रयुक्त 'पिया घर अई है' 'कर श्रृंगार अंगन भई थाड़ी' जैसे श्रृंगार परक शब्दों के माध्यम से स्पष्टतः संयोग श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हो रही है। इसके साथ ही 'चैत मास चुनरी रंगइवे हो रामा' जैसे शब्दों के प्रयोग से ऋतु के वर्णन द्वारा भी संयोग श्रृंगार रस मुखरित हो रहा है।

स्वरानुसार रस

जिस प्रकार कजरी एक लोकधुन है जोकि सावन मास में गाई जाती है उसी प्रकार चैती विधा का गायन भी किसी विशेष राग में नहीं किया जाता अपितु एक विशेष धुन या स्वरावलि के अर्न्तगत किया जाता है। प्रस्तुत चैती भी किसी विशेष राग में निबद्ध ना होकर चैती की लोकधुन में निबद्ध की गई है। प्रस्तुत चैती में प्रयुक्त स्वरों के माध्यम से श्रृंगार रस के संयोग पक्ष की अभिव्यंजना प्रतीत हो रही है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव

प्रस्तुत चैती में गिरिजा देवी ने चैत्र मास का वर्णन करते हुए विशेष स्वर एवं शब्दों के प्रयोग द्वारा बड़ी ही खूबसूरती से **वासकलज्जा नायिका** का वर्णन किया है कि चैत मास में नायिका 'अपनी चुनरी रंगा' देगी क्योंकि पिया घर आने वाले है, यहाँ पर नायिका के उत्सुकता का भाव स्वतः ही हमारे सम्मुख प्रस्तुत हो रहा हैः–

प़	–	ध़	ध़	सा	–	ग	ग	रे	–	ग	–	म	–
चै	ऽ	त	मा	ऽ	स	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	र	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	–	–	सा	–	–	म	ग	रे	–
ग	इ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	हो	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	सा	ग	रे	ग	सा	नि़	–	ध़	नि़	ध़	प़
पि	या	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	अ	इ	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ

प्रस्तुत स्वर–साहित्य समन्वय द्वारा भी नायिका की उत्सुकता का भाव दृष्टिगोचर हो रहा हैः–

					सा	–	–	–	–	नि़	सा	नि़	ध़
					पि	या	घ	ऽ	र	अ	ई	है	ऽ
प	–	–	–	–	–	नि़	ध़	सारे	गरे	स–	रे	–	स
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पि	या	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	घ	ऽ	रा
नि़	सा	ध	प	–	–	–	म	ग	–	–	–	–	–
अ	ई	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग़	–	–	ग	प	ग	रे	सा	ग	रे	–	सा	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	घ	र	ऽ	ऽ	अ	ई	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ

–	–	–	ग	–	म	प	–	–	प	म	ग	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	प	ध	प	म	ग	रे	सा	–	–	सा	–	निध	प़
घ	र	अ	इ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽऽ	ऽ

यहाँ पर स्वर एवं शब्दों के संयोजन द्वारा गिरिजा देवी ने नायिका की खुशी का भाव व्यक्त किया है।

												सारे हाँऽ	गप ऽऽ
––	म	–	–	–	–	–	–	–	प	–	–	–	म
ऽऽ	चै	त	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	चु
प	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
द	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–	–	–	–	–	म	–	ग	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रं	ग	ई	वे	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	म	पम	प	ध	प	–
ऽ	ऽ	ऽ	चु	न	ऽ	री	ऽ	रं	इ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
ध	प	म	ग	–	–	रे	–	सा	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	ग	–	–	रे	ग	रेग	रेसा	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	घ	र	अऽ	इऽ	ऽ	है	ऽ	हो	ऽ
–	–	ग–	रे	ग	रे	ग	म	–	–	–	–	–	ग
ऽ	ऽ	हाँऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पि
म	ग	म	रे	ग	रे	स	–	–	–				
या	घ	र	अ	इ	ऽ	है	ऽ	रे	ऽ				

प्रस्तुत चैती में गिरिजा देवी ने साहित्य में वर्णित स्वर लगाव के द्वारा एक **वासकलज्जा नायिका** का सजीव चित्रण हमारे सम्मुख इस प्रकार व्यक्त किया है:–

सा	–	–	प	ग	म	प	प	–	–	–	–	–	प
प्री	त	ऽ	रं	ऽ	ग	ऽ	ल	हँ	ऽ	गा	ऽ	ऽ	सो
म	ग	–	प	म	ध	–	प	–	ग	–	–	–	–
दू	जे	ऽ	रं	ऽ	ग	ऽ	चो	लि	ऽ	याँ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	रेसा	धसा	रेग	मग	––	––	म	–	–	–	–	–	रे

ला	ऽऽ	ऽऽ		ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ल	रं	ग	चु		न	री	ऽ	रं
ग	रे	स		रे–	गरे	सा–	सा	नि़	सा	नि़		सा	ग	–	रे
ग	ई	ऽ		वेऽ	ऽऽ	ऽऽ	हो	रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	गम		प	–	–	–	म	प	म		प	–	–	प
हो	ऽ	लाऽ		ल	ऽ	रं	ग	चु	न	ऽ		री	ऽ	ऽ	रं
मं	प	–		–	–	ग	–	म	ग	रे		सा	–	–	–
ग	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ	रा	मा	ऽ		रे	ऽ	ऽ	ऽ

यहाँ पर गिरिजा देवी ने स्वर और शब्दों के प्रयोग द्वारा नायिका के मिलन के भाव को प्रदर्शित किया है:–

											सा	ग	ग	मं
											क	र	ऽ	श्रृं
प	–	–		–	–	–	–	–	–	मं	–	–	ग	रे
गा	ऽ	ऽ		र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अं	ग	न	भ	ई
स	नि़	प		–	–	–	–	–	–	–	–	म	ग	–
ऽ	था	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ड़ी	रे	ऽ
स	ग	–		–	–	–	–	रे	ग	मं	ग	–	–	म
हँ	स	ऽ		हँ	ऽ	स	ऽ	पि	या	ऽ	को	ऽ	रि	ऽ
ग	रे	–		सा	–	नि़	–	नि़	सा	नि़	सा	ग	–	रे
झै	ऽ	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ

शैली पर ताल का प्रभाव –

अधिकतर चैती गायन हेतु दीपचंदी ताल का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत चैती ताल दीपचंदी में निबद्ध की गई है एवं दीपचंदी ताल के साथ ही लग्गी स्वरूप कहरवा ताल का भी प्रयोग किया गया है।

'चैती' गिरिजा देवी ताल – दीपचंदी

स्थाई:– चैत मास बोलैली कोयलिया हो रामा मोरे अंगनवा

कूहक उठत करे काली रे कोयलिया

कूक उठत मोरे मनवा हो रामा मोरे अंगनवा।।

अन्तराः– याद आवत जब पिया के मिलन की

भरि भरि आवत नयनवा हो रामा मोरे अंगनवा।।

प्रारम्भिक आलापः– सा नि़ सा नि़ ध – प , प़ नि़ ध़ नि़ रे – सा , सा नि़ ध़प़

प़ – ध़ – सा – – – सा – रे ग म

चै ऽ त ऽ मा ऽ स ऽ बो ऽ ले ऽ को

ग	रे	सा	–	–	नि़	–	नि़	सा	नि़	सा	ग	–	रे
य	लि	ऽ	या	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	रे	ग	–	स	नि़	ध़	–	प	–	–	–
मो	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	अँ	ग	न	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ग	ग	–	–	–	सा	–	रे	ग	–	म	–
चै	त	ऽ	मा	ऽ	स	ऽ	बो	लै	ऽ	ली	ऽ	को	ऽ
ग	रे	सा	–	–	नि़	–	नि़	सा	नि़	सा	ग	–	रे
य	लि	ऽ	या	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	रे	ग	–	स	नि़	ध़	–	प	–	–	–
सा	–	–	रे	ग	–	स	नि़	ध़	–	प	–	–	–
मो	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	अं	ग	न	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	–	सा	–	–	–	–	–	–	–	–	सा	–
चै	त	ऽ	मा	ऽ	स	ऽ	बो	लै	ऽ	ली	ऽ	को	ऽ
रे	–	–	सा	–	प़	–	सा	–	–	–	–	–	–
य	लि	ऽ	या	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
कू	ऽ	ह	क	ऽ	उ	ऽ	ठ	त	ऽ	क	रे	ऽ	ऽ
प	म	ग	प	म	ध	–	–	–	–	ग	–	–	–
का	ली	ऽ	रे	ऽ	को	ऽ	य	लि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

कू	ऽ	ऽ		क	ऽ	उ	ऽ		ठ	त	ऽ		क	रे	ऽ	ऽ
प	म	ग		प	म	ध	–		–	–	–		ग	–	–	–
का	ली	ऽ		रे	ऽ	को	ऽ		य	लि	ऽ		या	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	–	म	–
कू	ऽ	ऽ		क	ऽ	ड	ऽ		ठ	त	ऽ		मो	ऽ	रे	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	सा	नि़		सा	नि़	–		सा	ग	–	रे
म	न	ऽ		वा	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ग		–	–	ग	ग		रे	–	–		ग	–	म	–
कू	ऽ	ऽ		क	ऽ	ड	ऽ		ठ	त	ऽ		मो	ऽ	रे	ऽ
ग	रे	सा		नि़	–	–	–		सा	रे	ग		रे	–	–	–
म	न	ऽ		वा	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		रे	ग	–	स		नि़	ध़	–		प	–	–	–
मो	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	टं		ग	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ग		ग	–	–	–		सा	–	रे		–	–	ग	म
चै	त	ऽ		मा	ऽ	स	ऽ		बो	लै	ऽ		ली	ऽ	को	ऽ
ग	रे	सा		–	–	नि़	–		नि़	सा	नि़		सा	ग	–	रे
य	लि	ऽ		या	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		रे	ग	–	सा		नि़	ध़	–		प	–	–	–
सा	–	–		रे	ग	–	स		नि़	ध़	–		प	–	–	–
मो	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	टं		ग	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

ग	म	प		–	–	–	–		–	–	–		–	–	–	–
या	ऽ	ऽ		द	ऽ	आ	ऽ		व	त	ऽ		ज	ऽ	ब	ऽ
म	–	–		–	–	प	–		ग	–	–		रे	–	सा	–
पि	या	ऽ		के	ऽ	मि	ऽ		ल	न	ऽ		की	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	प		–	–	–	–		–	–	–		–	–	–	–
या	ऽ	ऽ		द	ऽ	आ	ऽ		व	त	ऽ		ज	ऽ	ब	ऽ
म	–	–		–	–	प	–		ग	–	–		रे	–	सा	–
पि	या	ऽ		के	ऽ	मि	ऽ		ल	न	ऽ		की	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	प		–	–	–	–		–	–	–		–	–	–	–

या	ऽ	ऽ		द	ऽ	आ	ऽ		व	त	ऽ		ज	ऽ	ब	ऽ
म	–	–		–	–	प	–		ग	–	–		रे	–	सा	–
पि	या	ऽ		के	ऽ	मि	ऽ		ल	न	ऽ		की	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	प		–	–	–	–		–	–	–		–	–	–	–
या	ऽ	ऽ		द	ऽ	आ	ऽ		व	त	ऽ		ज	ऽ	ब	ऽ
म	–	–		–	–	–प	–		ग	–	–		रे	–	सा	–
पि	या	ऽ		के	ऽ	ऽमि	ऽ		ल	न	ऽ		की	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	ग		–	–	–	–		सा	–	रे		ग	–	म	–
भ	रि	ऽ		भ	ऽ	रि	ऽ		आ	ऽ	व		त	ऽ	न	य
ग	रे	सा		–	–	नि़	–		नि़	सा	नि़		सा	ग	–	रे
ऽ	न	ऽ		वा	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	ग		–	–	–	–		सा	–	रे		–	–	ग	म
भ	रि	ऽ		भ	ऽ	रि	ऽ		आ	ऽ	व		त	ऽ	न	य
ग	रे	सा		–	–	नि़	–		नि़	सा	नि़		सा	ग	–	रे
ऽ	न	ऽ		वा	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		रे	ग	–	स		नि़	ध़	–		प	–	–	–
मो	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	टं		ग	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	ग		ग	–	–	–		सा	–	रे		ग	–	म	–
चै	त	ऽ		मा	ऽ	स	ऽ		बो	लै	ऽ		ली	ऽ	को	ऽ
ग	रे	सा		–	–	नि़	–		नि़	सा	नि़		सा	ग	–	रे
य	लि	ऽ		या	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	–		रे	रे	–		सा	–	–	–
मो	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	टं		ग	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	रे	सा		–	–	नि़	–		सा	–	रे		ग	–	म	–
चै	त	ऽ		मा	ऽ	स	ऽ		बो	लै	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ[6]
X				2					0				3			

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत चैती में नायिका चैत्र मास में कोयल के कूकने का आनन्द उठाते हुए कह रही है कि चैत्र मास में मेरे आंगन में कोयल कूहु कूहु बोल रही है। जैसे ही उस कोयल की कूक नायिका के कानों में

पड़ती है वैसे ही नायिका के मन में हिलोंरे उठने लगती है परन्तु जब नायिका को पिया से मिलने की याद आती है तब उसके नयन भर आते है और वह प्रियतम की याद में बेचैन हो जाती है। इस प्रकार जहाँ एक ओर नायिका चैत मास में कोयल की कूक का आनन्द लेते हुए प्रसन्नता का अनुभव करती है वहीं दूसरी ओर अपने प्रियतम से मिलने की याद करके विरह भाव में डूब जाती है। यथा प्रस्तुत चैती में प्रयुक्त शब्द 'कूक उठत करे काली रे कोयलिया, कूक उठत मोरे मनवा हो रामा' के प्रयोग द्वारा श्रृंगार के संयोग पक्ष को उजागर किया गया है इसके साथ ही 'याद आवत जब पिया के मिलन की, भरि भरि आवत नयनवा के माध्यम से श्रृंगार रस का वियोग पक्ष दर्शाया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत चैती में प्रयुक्त शब्दों के माध्यम से श्रृंगार रस के दोनों पक्षों की अभिव्यक्ति भलि–भांति हो रही है।

स्वरानुसार रस

जैसा कि पहले बताया गया है कि चैती एक लोकविधा है और अधिकतर किसी विशेष राग में निबद्ध नहीं होती है। उसी प्रकार प्रस्तुत चैती भी एक विशेष राग में निबद्ध ना होकर चैती की विशिष्ट धुन में रची हुई है। प्रस्तुत चैती में प्रयुक्त स्वरों के अनुसार संयोग श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हो रही है।

स्वर और शब्द के अनुसार भाव

प्रस्तुत चैती में गिरिजा देवी ने स्वर एवं शब्दों के समन्वित रूप द्वारा नायिका के खुशी के भाव को बड़ी ही सुन्दरता से इस प्रकार व्यक्त किया हैः–

प़	–	ग		ग	–	–	–		सा	–	रे		ग	–	म	–
चै	त	ऽ		मा	ऽ	स	ऽ		बो	लै	ऽ		ली	ऽ	को	ऽ
ग	रे	सा		–	–	नि़	–		नि़	सा	नि़		सा	ग	–	श्रे
य	लि	ऽ		या	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		रे	ग	–	स		नि़	ध़	–		प	–	–	–
मो	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	अं		ग	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	–		प	–	–	–		–	–	–		–	–	–	–
कू	ऽ	ह		क	ऽ	उ	ऽ		ठ	त	ऽ		क	रे	ऽ	ऽ
प	म	ग		प	म	ध	–		–	–	–		ग	–	–	–

का	ली	ऽ	रे	ऽ	को	ऽ	य	लि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–	–	–	–	–	ग	रे	–	ग	–	म	–
कू	ऽ	ऽ	क	ऽ	उ	ऽ	ठ	त	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ
ग	रे	सा	नि़	–	सा	नि़	सा	नि़	–	सा	ग	–	रे
म	न	ऽ	वा	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ

खुशी के भाव के अतिरिक्त नायिका के विरह के भाव को भी गिरिजा देवी ने स्वर और शब्दों के माध्यम से इन पंक्तियों द्वारा सजाया है:–

ग	म	प	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
या	ऽ	ऽ	द	ऽ	आ	ऽ	व	त	ऽ	ज	ऽ	ब	ऽ
म	–	–	–	–	प	–	ग	–	–	रे	–	सा	–
पि	या	ऽ	के	ऽ	मि	ऽ	ल	न	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	ग	–	–	–	–	ग	रे	–	ग	–	म	–
भ	रि	ऽ	भ	ऽ	रि	ऽ	आ	ऽ	व	त	ऽ	न	य
ग	रे	सा	नि़	–	सा	नि़	सा	नि़	–	सा	ग	–	श्रे
ऽ	न	ऽ	वा	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ

शैली पर ताल का प्रभाव – प्रस्तुत चैती ताल दीपचंदी में निबद्ध की गई है एवं इसके साथ ही कहरवा ताल का भी प्रयोग किया गया है।

चैती –निर्मला देवी ताल – दीपचंदी

स्थाई – यहीं ठैया मोतिया हेराई गई ली रामा कहां वा मै ढूंढूं।।

अन्तरा–1 कोठवा पे ढुंढ ली, अटरिया पे ढुंढ ली।
ढूंढ एली सैया की सेजरिया हो रामा।।

अन्तरा–2 सासु से पुंछली, ननदिया से पुंछ ली।
देवरा से पूंछत लजा गई ली रामा।।

स्थाई –

प़	ध़	सा	सा	–	–	–	ग	ग	रे	ग	–	म	–
य	ही	ऽ	ठै	ऽ	या	ऽ	मो	ति	ऽ	या	ऽ	हे	ऽ
ग	–	–	रे	–	सा	नि़	नि़	सा	–	–	म	ग	रे
रा	ऽ	ऽ	ग	इ	ऽ	ले	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	–	–	गरे	गरे	नि़सा	सा	–	नि़	ध़	नि़	ध़	प़
क	हॉ	ऽ	वां	ऽऽ	ऽऽ	मैऽ	ढूं	ऽ	ऽ	ढूं	ऽ	ऽ	ऽ
प़	ध़	सा	सा	–	–	–	ग	ग	रे	ग	–	म	–
य	ही	ऽ	ठै	ऽ	या	ऽ	मो	ति	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	ग	–	–	–	–	सा	–	नि़	–	–	–	–
हे	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	इ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	–	–	सा	नि़	सा	नि़	–	–	सा	–	–	–	–
रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	नि़	सा	नि़	सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	मो	ऽ	ति	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	नि़ध़	–	प़	–	–	–	–	–	नि़	–	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	ऽ	ति
नि़	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	प़	नि़	सा	रे	नि़	ध़	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	ध़	नि़	ध़	नि़	ध़	प़	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	प़	ध़नि़	–	–	–	–	–	–	–	–	–	सा	–
ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	–	नि़	सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–
मो	ति	या	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	ध़	नि़	ध	–	प	–	प़	नि़	नि़	रे	सा	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ब	मो	ति	या	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	प़	नि़	–	रे	सा	नि़	सा	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	ऽ	ऽ	ति	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	या
सा	–	–	सा	–	नि़	–	प़	नि़	सा	रे	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	हे	ऽ	रा	ऽ	ग	इ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ

सा	–	नि़	–	–	–	–	प़	नि	सा	रे	रे	–	–		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	इ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ		
–	–	–	रे	ग	ग	ग	ग	म	प	म	–	ग	–		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	मा	ऽ		
–	रे	–	सा	–	सा	ग	–	–	–	–	–	–	–		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ब	मो	ति	या	ऽ	ऽ	हे	ऽ		
–	–	–	ग	ग	म	ग	रे	सा	नि़	नि़	सा	नि़	सा		
रा	ऽ	इ	ग	इ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	मा	ऽ		
म	ग	रे	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	हां	ऽ	वा	ऽ	ऽ	मै		
सा	–	–	–	–	–	–	गरे	गरे	सा	नि़	धनि़	ध	प		
ढूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ढूंऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ		
प़	ध़	–	सा	–	–	–	ग	ग	रे	ग	–	म	–		
य	हीं	ऽ	ठै	ऽ	या	ऽ	मो	ति	ऽ	या	ऽ	हे	ऽ		
ग	–	–	रे	–	सा	नि़	नि़	सा	–	–	म	ग	रे		
रा	ऽ	इ	ग	इ	ऽ	ले	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ		
नि़	सा	–	–	गरे	गरे	नि़	ध़	–	नि़	ध़	नि़	ध़	प़		
क	हां	ऽ	वा	ऽऽ	ऽऽ	मै	ढूं	ऽ	ऽ	ढूं	ऽ	ऽ	ऽ		
प़	ध़	–	सा	–	–	–	ग	ग	रे	ग	–ग	म	प		
य	ही	ऽ	ठै	ऽ	या	ऽ	मो	ति	ऽ	या	ऽऽ	हे	ऽ		
म	–	–	म	रे	ग	रे	ग	रे	–	सा	–	नि़	–		
रा	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ली	ऽ		
सा	ग	–	–	–	–	–	–	–	–	ग	प	म	ग		
अ	ब	मो	ति	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हे	रा	ऽ	ऽ		
रे	सा	नि़	नि़सा	–	गरे	–	–	–	–	–	–	नि़	सा		
य	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ग	इ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	मो	ति		
रे	म॑	म	–	–	–	–	–	–	–	–	–	म॑	प		
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हे	रा	य	ऽ	ग	इ		
म॑	प	म॑	प	–	–	–	म॑	प	म॑	प	सां	म	ग		
ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ		
ग	–	–	–	–	–	–	नि़	सा	–	–	गरे	गरे	नि़		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	हॉ	ऽ	वा	ऽऽ	ऽऽ	मै		
ध़	–	नि़	ध़	नि़	ध़	प़	नि़	नि़	सा	नि़सारेग	–	म॑	–		

ढ़ूं	ऽ	ऽ	ढ़ूं	ऽ	ऽ	ऽ	क	हॉ	ऽ	वाऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	—	—	ध़	—	—	नि़	ध़	नि़	ध़	प	—	—	—
मै	ऽ	ऽ	ढ़ूं	ऽ	ऽ	ऽ	ढ़ूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प़	ध़	सा	सा	—	—	—	ग	म	रे	ग	—	म	—
य	ही	ऽ	ठै	ऽ	या	ऽ	मो	ति	ऽ	या	ऽ	हे	ऽ
ग	—	—											
रा	ऽ	इ											

अन्तरा – 1.

							सा	—	ग	म॑	प	प	म॑
							को	ठ	वा	पे	ढ़ूं	ढ	ली
प	—	—	—	—	—	—	म॑	ध	प	म॑	ग	म॑	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
—	—	—	—	—	सागऽ	म॑धऽ	ध—	—	—	—	—	म॑	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	म	ग	—	—	रे	सा	—	—	सा	—	ग	म॑
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	को	ठ	वा	पे
प	प	म॑	प	—	—	—	—	प	म॑	प	म॑	प	—
ढ़ूं	ढ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ट	रि	ऽ	या	ऽ
म॑	—	ग	म	ग	—	—	—	—	—	सा	—	ग	म॑
पे	ऽ	ढ़ूं	ढ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	को	ठ	वा	ऽ
प	प	म॑	प	—	—	—	—	—	—	—	—	प	म॑
ढ़ूं	ढ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ट
प	म॑	प	म॑	—	—	—	ग	म	—	ग	—	—	—
रि	या	ऽ	पे	ऽ	ऽ	ऽ	ढ़ूं	ढ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ
X			2				0			3			

कहरवे की लय –

सा ग ग ग	ग गरे ग म	मग गरे रेसा सा	नि़सा साग रे –
ढूं ढ ए ली	सै याऽ की से	ऽज रिऽ याऽ हो	राऽ ऽऽ मा ऽ
सा ग ग ग	ग गरे ग म	मग गरे रेसा सा	नि़सा साग रे –
ढूं ढ ए ली	सै याऽ की से	ऽज रिऽ याऽ हो	राऽ ऽऽ मा ऽ
सा ग ग ग	ग गरे ग म	मग गरे रेसा सा	नि़सा साग रे –
ढूं ढ ए ली	सै याऽ की से	ऽज रिऽ याऽ हो	राऽ ऽऽ मा ऽ
X	0	X	0

अन्तरा – 2

			सा	–	ग	म॑	प	प	म॑	प	–	–	–
			सा॒	ऽ	सु	से	पुं	छ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	म	ग	–	–	प	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	सा	ग	–	–	–	–	–	म	ग	रेसा	नि़–	–	–
ऽ	अ	ब	सा	ऽ	सु	ऽ	से	पूं	छ	लीऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	नि़	सा	गम	गरे	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	नि़	–	रेग	–	रेरे	सा–	–	नि़	रेगम॑	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सा	गम॑	म॑	–	म॑प	म॑प	–	नि़	सा	नि़	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	–	साग	म॑प	–	म	म	ग	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सा	–	ग	म	प	प	म॑	प	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	सा	ऽ	सु	से	पूं	छ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

सा	–	ग	म	–	–	–	–	प	प	र्म		प	–	–	–
न	न	दि		या	ऽ	से	ऽ	पूं	छ	ली		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X				2				0				3			

कहरवे की लय –

सा	ग	ग	ग	ग	गरे	ग	म	मग	गरे	रेसा	सा	निसा	साग	रे	–
दे	व	रा	से	पूं	छऽ	त	ल	जाऽ	गऽ	इऽ	ले	राऽ	ऽऽ	मा	ऽ
सा	ग	ग	ग	ग	गरे	ग	म	मग	गरे	रेसा	सा	निसा	साग	रे	–
दे	व	रा	से	पूं	छऽ	त	ल	जाऽ	गऽ	इऽ	ले	राऽ	ऽऽ	मा	ऽ
सा	ग	ग	ग	ग	गरे	ग	म	मग	गरे	रेसा	सा	निसा	साग	रे	–
दे	व	रा	से	पूं	छऽ	त	ल	जाऽ	गऽ	इऽ	ले	राऽ	ऽऽ	मा	ऽ
X				0				x				0			

प़	ध़	सा	सा	–	–	–	ग	ग	रे	ग	–	म	–
य	ही	ऽ	ठै	ऽ	या	ऽ	मो	ति	ऽ	या	ऽ	हे	ऽ
ग	–	–	रे	–	सा	नि़	नि़	सा	–	–	म	ग	रे
रा	ऽ	ऽ	ग	इ	ऽ	ले	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	ध़	सा	सा	–	–	–							
य	ही	ऽ	ठै	ऽ	या	ऽ[7]							
X			2				0			3			

प्रस्तुत चैती निर्मला देवी द्वारा गाई गई है। निर्मला देवी द्वारा गाई गई चैती किसी विशेष राग में निबद्ध ना होकर तरह–तरह के स्वर–संयोजन से सजाई गई है तथा भिन्न–भिन्न स्वरों के साथ साहित्यिक समन्वय के द्वारा भिन्न–भिन्न भावों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत चैती के माध्यम से हो रही है।

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत चैती में नायिका के आभूषण का मोती कहीं खो गया है जिस कारण नायिका अत्यन्त व्याकुल है और कह रही है कि यहीं कहीं मेरा मोती खो गया है मै उसे कहाँ ढूंढूं। नायिका व्याकुल होकर इधर–उधर भटक रही है, कभी वह कोठे पर ढूंढ रही है तो कभी छत पर ढूंढ रही है और वहाँ भी ना मिलने पर प्रियतम की सेज पर ढूंढती है लेकिन वह मोती कही नही मिल रहा है। इसके बाद नायिका साँस से पूछती है और ननद से भी पूछती है, लेकिन वह मोती किसी के पास नहीं मिलता फिर

वह देवर से पूछती है परन्तु नायिका देवर से पूछने पर नायिका लज्जा का अनुभव करती है। वहाँ भी ना मिलने पर नायिका पुनः उसे ढूंढने का प्रयत्न करती है।

प्रस्तुत चैती में वर्णित साहित्य के द्वारा व्याकुलता एवं उत्कंठा का भाव व वियोग श्रृंगार रस की निष्पत्ति हो रही है।

स्वरानुसार रस

प्रस्तुत चैती, चैती की लोकधुन में निबद्ध की गई है। प्रस्तुत चैती में वर्णित साहित्य में प्रयुक्त होने वालें स्वरों से श्रृंगार रस के वियोग पक्ष को दर्शाया गया है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव

निर्मला देवी ने स्वर एवं शब्द के समन्वय द्वारा नायिका के विरह भाव का बड़ी ही सुन्दरता से वर्णन किया है। निर्मला देवी ने शब्दों को स्वरों में ढालकर नायिका द्वारा "यही ठैया मोतिया हेराय गई ले रामा" मानों कि जीवंत ही कर दिया है। इन शब्दों में विरह का वर्णन निर्मला देवी ने इस प्रकार व्यक्त किया हैः–

प़	ध	–	सा	–	–	–	ग	ग	रे	ग	–	म	–
य	ही	ऽ	ठै	ऽ	या	ऽ	मो	ति	ऽ	या	ऽ	हे	ऽ
ग	–	–	रे	–	सा	नि़	नि़	सा	–	–	म	ग	रे
रा	ऽ	इ	ग	इ	ऽ	ले	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	–	–	गरे	गरे	निसा	सा	–	नि़	ध	नि़	ध़	प़
क	हाँ	ऽ	वा	ऽऽ	ऽऽ	मैऽ	ढूँ	ऽ	ऽ	ढूँ	ऽ	ऽ	ऽ
					प़	नि़	–	रे	सा	नि़	सा	रे	सा
					मो	ऽ	ऽ	ति	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	या
सा	–	–	सा	–	नि़$^{सा}$	–	प़	नि़	सा	रे	रे	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	हे	ऽ	रा	ऽ	य	ग	इ	ली	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	नि़	–	–	–	–	प़	नि़	सा	रे	रे	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	इ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	रे	ग	ग	ग	ग	म	प	म	–	ग	–

ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		रा	ऽ	मा	ऽ
–	रे	–		सा	–	सा	ग		–	–	–		–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	अ	ब		मो	ति	या		ऽ	ऽ	हे	ऽ
–	–	–		ग	ग	म	ग		रे	सा	नि़		नि़	सा	नि़	सा
रा	ऽ	इ		ग	इ	ली	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		रा	ऽ	मा	ऽ

निर्मला देवी द्वारा विरह के साथ व्याकुलता का भाव भी व्यक्त किया गया है जो कि इस प्रकार हैः–

													नि़	स
													मो	ति
रे	म॑	–		–	–	–	–		–	–	–		–	–	म॑	प
या	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	हे	रा		य	ऽ	ग	इ
म॑	प	म॑		प	–	–	–		म॑	प	म॑		प	सां	म	ग
ली	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–		–	–	–	–		नि़	सा	–		–	गरे	गरे	नि़
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		क	हाँ	ऽ		वा	ऽऽ	ऽऽ	मै
ध़	–	नि़		ध़	नि़	ध़	प़		नि़	नि़	सा		नि़सारेग	–	म॑	–
ढूँ	ऽ	ऽ		ढूँ	ऽ	ऽ	ऽ		क	हाँ	ऽ		वाऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	–	–		ध	–	–	नि़		ध़	नि़	ध़		प़	–	–	–
मै	ऽ	ऽ		ढूँ	ऽ	ऽ	ऽ		ढूँ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरे में विरह का भाव इस प्रकार व्यक्त किया गया हैः–

												सा	–	ग	म॑
												को	ठ	वा	ऽ
प	प	म॑		प	–	–	–		–	–	–		–	–	प	म॑
ढूँ	ढूँ	ऽ		ली	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	अ	ट
प	म॑	प		म॑	–	–	–		ग	म	–		ग	–	–	–
रि	या	ऽ		पे	ऽ	ऽ	ऽ		ढूँ	ढ	ऽ		ली	ऽ	ऽ	ऽ

स	ग	ग	ग		ग	गरे	ग	म		मग	गरे	रेसा	सा	निसा़	सागृ	रे	–
ढूँ	ढ	ए	ली		सै	याऽ	की	से		ऽज	रिऽ	याऽ	हो	राऽ	ऽऽ	मा	ऽ

शैली पर ताल का प्रभाव

प्रस्तुत चैती विदुषी निर्मला देवी द्वारा ताल दीपचंदी में निबद्ध की गई है तथा अन्त में चमत्कारिक लग्गी के रूप में कहरवा ताल का प्रयोग किया गया है।

चैती **(ताल दीपचंदी)**

स्थाईः– नैहर से केहु नाही अइवे हो रामा

बीत ले फगुनवा

अन्तराः– बाबा मोरा कह देत

नउआ के पठौरे

सारी संग चुरिया से मुगवा हो रामा

बीत ले फगुनवा

अन्तराः– माई मोरा कहती

भैया के पठौरे

भौजी के तखिले करेजवा हो रामा

बीत ले फगुनवा

प्रारम्भिक आलापः– सा रे ग रेसा सारेगऽ , म ग म ग म गरे ऽ , सा नि़ धनि़ सा ग ऽ रेग रेस नि़ नि़ ध़ सा , सा ग रेसा सा रे ग ऽ ऽ ऽ

स्थाई :–

सा	ग	–	–	–	–	–	ग	रे	–	ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ	ह	र	से	ऽ	के	हु	ऽ	ना	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	सा	ग	रे	सा	नि़	स	नि़	–	सा	ग	–	रे
अ	ई	ऽ	वे	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–	–	–	–	–	ग	रे	–	ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ	ह	र	से	ऽ	के	हु	ऽ	ना	ऽ	ही	ऽ

ग	रे	सा		ग	रे	सा	नि़		स	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ		ह	र	से	ऽ		के	हु	ऽ		ना	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	सा		ग	रे	सा	नि़		स	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		र	रे	–		ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ		ह	र	से	ऽ		के	हु	ऽ		ना	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	सा		ग	रे	सा	नि़		स	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ		ह	र	से	ऽ		के	हु	ऽ		ना	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	सा		ग	रे	सा	नि़		स	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	ई	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		सा	रेग	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फा		गु	न	ऽ		वा	ऽऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ		ह	र	से	ऽ		के	हु	ऽ		ना	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	सा		ग	रे	सा	नि़		स	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	इ	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	नि़		सा	ध़	–	नि़		स	रे	–		–	–	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	नि़		सा	नि़	ध़	प़		नि़	सा	रे		सा	–	–	–
ऽ	बी	त		ले	ऽ	ऽ	ऽ		फ	गु	न		वा	ऽ	ऽ	ऽ
–	नि़	सा		सा	ग	–	रे		ग	रे	–		सा	–	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	नि़		सा	नि़	ध़	प़		नि़	सा	रे		–	–	ग	रेसा
ऽ	बी	त		ले	ऽ	ऽ	ऽ		फ	गु	न		वा	ऽ	हाँ	ऽऽ
नि़	सा	नि़		सा	ध़	–	नि़		स	रे	–		–	–	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	–	म	–

नै	ऽ	ऽ		ह	र	से	ऽ		के	हु	ऽ		ना	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	सा		ग	रे	सा	नि़		स	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	इ	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		सा	रेग़	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फा		गु	न	ऽ		वा	ऽऽ	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	–	–		स	–	रेग़		ग	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ए	री	बीऽ़		त	ले	ऽ	ऽ
ग	ग	म		ग	रे	–	–		–	–	–		सा	ग	रे	ग
फ	गु	न		वा	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		बी	ऽ	त	ऽ
–	–	–		ग	मध़	पम़	ग		रे	सा	ग		–	सा	ग	–
ले	ऽ	ऽ		फ	गुऩ	वाऽ़	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	बी	ऽ	त
रे	प	–		–	–	ध	मम़		ग	–	–		–	–	–	–
ले	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	फ	गुऩ		वा	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	प	–		–ग़	रे	ग	गपम़		ग	रे	रे		सा	ग	–	रे
बी	ऽ	त		ले	ऽ	ऽ	ऽऽऽ		फ	गु	न		वा	ऽ	ऽ	ऽ
–	सा	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		सा	रेग़	–	–
ऽ	बी	त		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–									
नै	ऽ	ऽ		ह	ऽ	र	ऽ									

अन्तरा–1

सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	ग	रेसा़
बा	बा	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ऽ	ऽ	के	ऽऽ़
सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	ग	रेसा़
बा	बा	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ऽ	ऽ	के	ऽऽ़
सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		म	प	ध	प
बा	बा	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		के	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	–	–
बा	बा	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		के	ऽ	ऽ	ऽ
सा	नि	–		ग	रे	म	–		प	–	–		ग	रेसा़	–	–
बा	बा	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		के	ऽऽ़	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	ग	म		ध	–	सां		नि	ध	–	प

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ए	री	ब	ऽ	बा	ऽ	मो	ऽ	रा
प	म	प	म	ग	म	ध	प	म	ग	रे	ग	रेसा	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ह	ऽ	दे	ऽ	तऽ	ऽ
सा	सा	–	ग	रे	म	–	प	–	–	–	–	ग	रेसा
बा	बा	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ	र	ह	ऽ	दे	ऽ	त	ऽ
सा	सा	–	ग	रे	म	–	प	–	–	–	–	ग	रेसा
बा	बा	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ	र	ह	ऽ	दे	ऽ	त	ऽऽ
प	–	म॑	–	–	–	–	प	पध	पध	म	ग	–	–
न	उ	आ	ऽ	के	ऽ	ऽ	प	ठौऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–	ग	रे	म	–	प	–	–	–	–	ग	रेसा
बा	बा	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ	र	ह	ऽ	के	ऽ	त	ऽ
प	–	म॑	–	–	–	–	प	पध	पध	म	ग	–	–
न	उ	आ	ऽ	के	ऽ	ऽ	प	ठौऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
म॑	–	प	–	–	–	–	म	पनि	ध–	म	ग	–	–
न	उ	आ	ऽ	के	ऽ	ऽ	प	ठौऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
म॑	–	प	–	मप	धनि	धप	म	पध	पध	म	ग	–	–
न	उ	आ	के	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	प	ठौऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–	ग	रे	म	–	प	–	–	–	–	ग	रेसा
बा	बा	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ	र	ह	ऽ	दे	ऽ	त	ऽऽ
प	–	म॑	–	–	–	–	प	पध	पध	म	ग	–	–
न	उ	आ	के	ऽ	ऽ	ऽ	प	ठौऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	म॑	–	–	–	–	प	पध	पध	म	ग	–	–
न	उ	आ	के	ऽ	ऽ	ऽ	प	ठौऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	म॑	–	–	–	–	प	पध	पध	म	ग	–	–
न	उ	आ	के	ऽ	ऽ	ऽ	प	ठौऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–	ग	रे	म	–	प	–	–	–	–	ग	रेसा
बा	बा	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ	र	ह	ऽ	दे	ऽ	त	ऽऽ
प	–	म॑	–	–	–	–	प	पध	पध	म	ग	–	–
न	उ	आ	के	ऽ	ऽ	ऽ	प	ठौऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–	ग	रे	म	–	प	–	–	–	–	ग	रेसा
बा	बा	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ	र	ह	ऽ	दे	ऽ	त	ऽऽ
ग	–	–	–	–	–	–	–	गरे	सानि	धप	सारे	ग	–

सा	री	ऽ		सं	ऽ	ग	ऽ		हाँ	ऽऽ	ऽऽ		ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	म	–	ग
सा	री	ऽ		सं	ऽ	ग	ऽ		चु	रि	ऽ		याँ	ऽ	ऽ	से
रे	सा	ग		रे	–	–	–		सा	नि़	सा		नि़सा	ग	–	रे
मुं	ग	ऽ		वा	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		माऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	म	–	ग
सा	री	ऽ		सं	ऽ	ग	ऽ		चु	रि	ऽ		याँ	ऽ	ऽ	से
रे	सा	ग		रे	–	–	–		सा	नि़	सा		नि़सा	ग	–	रे
मुं	ग	ऽ		वा	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		माऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	म	–	ग
सा	री	ऽ		सं	ऽ	ग	ऽ		चु	रि	ऽ		या	ऽ	ऽ	से
रे	सा	ग		रे	–	–	–		सा	नि़	सा		नि़सा	ग	–	रे
मुं	ग	ऽ		वा	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		म	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		सा	रेग	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ		ह	र	से	ऽ		के	हु	ऽ		ना	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	सा		ग	रे	सा	नि़		सा	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	इ	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		सा	रेग	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा–2

सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	–	प
मा	ई	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	म		ध	–	प	–		–	–	प		म	ग	–	रे
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ती		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		ग	म	–	–		प	–	–		–	–	–	–
मा	ई	ऽ		मो	रा	र	ह		ती	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		ग	–	म	–		प	–	–		प	ध	प	ध
मा	ई	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ऽ

सा	–	–		ग	–	म	–		प	ध	प		–	–	–	–
मा	ई	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–		सा	ग	ध	–		प	–	–		–	–	ध	प
ऽ	ऽ	ऽ		ए	री	मा	ई		ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	मो	रा
ध	नि	ध		प	–	–	–		–	–	–		म	ध	प	म
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		र	ऽ	ह	ऽ
ग	रे	सारे		ग–	रेग	म–	ग		ध	–	प		–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽऽ		ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ती		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	–	प
मा	ई	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	–	प
मा	ई	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	–	प
मा	ई	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ऽ
मं	–	–		प	प	ग	म		म	ग	–		–	–	–	–
भै	या	ऽ		के	ऽ	प	ऽ		ठौ	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	–	प
मा	ई	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ते
मं	–	–		प	प	ग	म		म	ग	–		–	–	–	–
भै	या	ऽ		के	ऽ	प	ऽ		ठौ	ऽ	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ऽ
मं	–	–		प	प	ग	म		म	ग	–		–	–	–	–
भै	या	ऽ		के	ऽ	प	ऽ		ठौ	ऽ	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	ग		म	–	ग	रे
भौ	ऽ	ऽ		जी	ऽ	के	ऽ		त	खि	ऽ		ले	ऽ	क	ऽ
स	ग	–		रे	–	सा	नि़		सा	नि़	–		सा	ग	–	रे
रे	ज	ऽ		वा	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	ग		म	–	ग	रे
भौ	ऽ	ऽ		जी	ऽ	के	ऽ		त	खि	ऽ		ले	ऽ	क	ऽ
सा	ग	–		रे	–	सा	नि़		सा	नि़	–		सा	ग	–	रे
रे	ज	ऽ		वा	ऽइ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		मा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	सा		ग	रे	ग	स		सा	नि़	–		सा	ग	–	रे

बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	सा	नि़		प़	–	नि़	स		रे	सा	नि़		सा	रेग	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ		ह	र	से	ऽ		के	हु	ऽ		न	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	स		ग	रे	सा	नि़		सा	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	ठ	ऽ		वे	ऽ	हो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		म	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		सा	रेग	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		स	रेग	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		स	रेग	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ

साहित्यानुसार भाव व रस – प्रस्तुत चैती में प्रयुक्त साहित्य में नायिका अपने विरह का वर्णन कर रही है और कह रही है कि अब तो फागुन भी बीत गया परन्तु नैहर से कोई भी बुलाने नहीं आया।

स्वरानुसार रस – प्रस्तुत चैती भी लोकगीत में प्रयुक्त होने वाले स्वरों से सुसज्जित है। प्रस्तुत चैती में प्रयोग किये जाने वाले स्वरों के माध्यम से नायिका का विरह पक्ष दर्शित हो रहा जिससे बरबस ही श्रृंगार रस के वियोग पक्ष की अभिव्यक्ति हो रही है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव – प्रस्तुत साहित्य में प्रयुक्त स्वरों के समन्वय द्वारा नायिका की विरह वेदना का वर्णन किया गया है –

सा	ग	–		–	–	–	–		ग	रे	–		ग	–	म	–
नै	ऽ	ऽ		ह	र	से	ऽ		के	हु	ऽ		न	ऽ	ही	ऽ
ग	रे	स		ग	रे	सा	नि़		सा	नि़	–		सा	ग	–	रे
अ	ठ	ऽ		वे	ऽ	रो	ऽ		रा	ऽ	ऽ		म	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–		–	–	–	ग		रे	सा	नि़		सा	रेग	–	–
बी	त	ऽ		ले	ऽ	ऽ	फ		गु	न	ऽ		वा	ऽ	ऽ	ऽ

यहाँ पर नायिका अपने विरह भाव को पुनः स्वर और साहित्य के समन्वय द्वारा अभिव्यक्त करती है –

सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	ग	रेसा
बा	बा	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		के	ऽ	त	ऽ
प	–	म		–	–	–	–		प	पध	पध		म	ग	–	–
न	उ	आ		ऽ	के	ऽ	ऽ		प	ठौऽ	ऽऽ		रे	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–		ग	रे	म	–		प	–	–		–	–	–	प
मा	ई	ऽ		मो	ऽ	रा	ऽ		र	ह	ऽ		ती	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–		प	प	ग	म		म	ग	–		–	–	–	–
भै	या	ऽ		के	ऽ	प	ऽ		ठौ	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	ऽ

शैली पर ताल का प्रभाव – प्रस्तुत चैती में भी चैती लोकधुन में प्रयुक्त होनें वाली दीपचंदी ताल का प्रयोग किया गया है।

होरी –

होरी फागुन के महीने में गाई जाती है। होली को दो प्रकार से विभक्त किया गया है– पक्की होली, कच्ची होली। पक्की होरी धमार के अन्तर्गत आती है। धमार में राधा–कृष्ण से सम्बन्धित शब्दों की अभिव्यक्ति होती हैं जिससे श्रृंगार रस की उत्पत्ति होती हैं कच्ची होरी लोक संगीत व उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आती है। इसमें भी श्रृंगार रस की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। होरी के गीतों के पदों के वर्ण्य विषय में अधिकांशतः राधा–कृष्ण और गोपियों की फाल्गुन की लीलाओं का वर्णन होता है। इस प्रकार श्रृंगार रस के संयोग तथा वियोग दोनों ही रूप इन गीतों में दिखाई देते है। ब्रज एवं अवध क्षेत्र में होली गीतों का प्रयोग अधिक दिखाई पड़ता है। बनारस में उपशास्त्रीय ढ़ंग से होली प्रस्तुत करने का अपना अलग ही ढ़ंग ढ़ंग है। होली सामान्यतः काफी राग में गाई जाती है। इसके अतिरिक्त खमाज, पीलू, पहाड़ी आदि रागों में भी होली गीतों का प्रयोग भली–भाँति किया जाता है।

होरी – (राग गारा) गिरिजा देवी ताल – कहरवा

स्थाई – उड़त अबीर गुलाल, लाली छाई है।

अन्तरा – 1. लाल श्याम लाल भई राधे।

लाल नवल ब्रजवाम।।

अन्तरा – 2. अम्बर लाल लाल भई जमुना।

लाल गऊयें गोपाल।।

स्थाई –

नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे सा	नि़ सा ध नि़	सा – सा –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –	रे सा नि़ नि़	सा सा रे सा
छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि़	सा – सा –	रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे सा	नि़ सा ध नि़	सा – सा –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –	नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे ग
छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि़	सा – सा –	म– म– ग– रे–	ग रे – सा
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे ग	नि़ सा ध नि़	नि़ – प –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
सा– –– –– –	गरे स – नि़	नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे ग
छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	है ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध नि़	सा – सा –	रेग मम म– म–	गरे सा नि़ –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छा ऽ ऽ ई	है ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे ग	नि़ सा ध नि़	सा – सा –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –	नि़ सा नि़ नि़	सा सा रे ग
छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु

– – – –	– – – –	– – – –	– सा रेग म–
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ हां ऽऽ ऽऽ
रेग मप –– म–	– – – –	– – – म–	ग म – –
ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ लाऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे ग रे सा	नि़ सा धनि़ मरे	रे ग़ रे सा	– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ली ऽऽ ऽऽ	छा ऽ ऽ ई	है ऽ ऽ ऽ
– – – –	– – – –	नि़ सा नि़ नि़	सा – रे सा
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि़	सा – – –	रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे ग	नि़ सा ध़ नि़	सा – सा –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
– – – –	– – – –	नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे ग
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि	सा – – –	रेग मप म– ग–	गरे सा नि़ –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे सा	नि़ सा ध़ नि़	सा – सा –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –	रे सा नि़ नि़	सा सा रे सा
छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि़	सा – – –		
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ		

अन्तरा – 1

– सा ध़ नि़	सा – सा –	ग ग ग म	रे ग़ रे सा
ऽ ला ऽ ल	श्या ऽ म ऽ	ला ल भ ई	रा ऽ धे ऽ
– सा ध़ नि़	सा – सा –	ग ग ग म	रे ग़ रे सा

ऽ ला ऽ ल	श्या ऽ म ऽ	ला ल भ ई	रा ऽ धे ऽ
– सा ध़ नि़	सा – सा –	ग ग ग म	रे ग़ रे सा
ऽ ला ऽ ल	श्या ऽ म ऽ	ला ल भ ई	रा ऽ धे ऽ
ग – ग ग	ग ग म प	म – ग म	रे ग़ रे सा
ला ऽ ल न	व ल ब्र ज	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ म ऽ
ग – ग ग	ग ग म प	म – ग म	रे ग़ रे सा
ला ऽ ल न	व ल ब्र ज	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ म ऽ
नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे सा	नि़ सा ध नि़	सा – सा –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
रेग मम म– ग–	ग़रे सा नि़ –	रे सा नि़ नि़	सा सा रे सा
छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि़	सा – सा –	रेग मम म– ग–	ग़रे सा नि़ –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे सा	नि़ सा ध नि़	सा – सा –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
रेग मम म– ग–	ग़रे सा नि़ –	रे सा नि़ नि़	सा सा रे सा
छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध नि़	सा – सा –	– – – –	– – – –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
– – – –	– – – –	सा गम प– गम	प– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	हॉ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
नि़ध प– –– ––	गम पम –– ग–	म– रे– ग– ––	–– रेसा –– ––
ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
रेसा नि़ नि़सा ––	नि़ प– –– ––	नि़सा ध़नि़ रे– ––	–– –– –– ––
ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ लाऽ
– – – –	नि़ प– –– ––	रे सा नि़ नि़	सा सा रे सा

ऽऽ ऽली ऽऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध नि़	सा – सा –		
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ		

अन्तरा – 2

– नि़सा ध़ नि़	सा – – रे	ग म ग रे	रे सा – नि
ऽ अऽ मब र	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा नि़ सा नि़	ध़ ध़ नि़ –	रे सा रे नि़	सा ध़ प़ –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ल	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
– रे – –	– – – –	सा – – –	– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
– रे सा नि़	सा – – –	– – ग –	ग म ग म
ऽ अ मब र	ला ऽ ऽ ल	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ भ ई
– रे ग़ रे	स रे ग़ सा	रे नि़ प़ नि़	ध़– सा – –
ऽ ज मु ना	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	म्ब र ऽ ऽ
– – – –	– – – –	– – ग– मरे	प – – –
ला ऽ ऽ ल	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ अम बर	ला ऽ ऽ ऽ
– – – –	– – प –	प– पध पध ––	म – ग –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ला ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ ल
म – ग –	रे रे ग़ रे	सा रे – नि़	सा – ध़– नि़प
भ ऽ ई ऽ	ज मु ना ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ अम बर
सा – – –	– – – –	– – – –	– ग – मप
ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ला ल भई
– – ग म	रे ग़ रे सा	– – – –	– – – –
ऽ ऽ ज मु	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

– – – –	– – – –	– – सारे गम	प– म– – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ लाऽ ऽऽ	ऽऽ ऽल ग ऽ
– – – –	म ग रे सा	म – – रे	रे ग – रे
ऊ ऽ ऐं ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ गो	पा ऽ ऽ ऽ
सा – रे नि़	सा रे – नि	सा – – ध़	– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ला	ऽ ऽ ली ऽ
ध़ नि़सा नि़सा –	सा – – –	रे सा नि़ नि़	सा सा रे सा
छा ऽऽ ऽऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि़	सा – सा –	रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ नि़ नि़	सा सा रे सा	नि़ सा ध नि़	सा – सा –
उ ड़ त अ	बी ऽ र गु	ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ
रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –	रे सा नि़ नि़	सा सा रे सा
छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि़	सा – सा –	सा ग म म	प – ध –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
म – ग –	रे ग रे सा	गम पध धप –	ग– – – –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ
रे – – रे	सा – – –	सा ग म म	प – ध –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	उ ड़ त अ	बी ऽ र गु
नि़ सा ध़ नि़	सा – सा –	रेग मम म– ग–	गरे सा नि़ –
ला ऽ ऽ ल	ला ऽ ली ऽ	छाऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ	हैऽ ऽ ऽ ऽ[8]
X	0	x	0

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत होरी में प्रयुक्त साहित्य के माध्यम से होरी का एक सजीव चित्रण हमारे सम्मुख प्रस्तुत हो रहा है। होरी में अबीर, गुलाल उड़ रहे है जिस कारण चारों तरफ लालिमा छा रही है जिससे नायिका अत्यन्त उत्साहित हो रही जिससे नायक और नायिका भी पूरी तरह से उस लालिमा में रंग गये है।

होरी का लाल रंग इस तरह से वातावरण में छाया हुआ है कि उस रंग में श्याम और राधिका और यहाँ तक कि ब्रजबाम भी पूरी तरह से रंग गये है, आकाश भी लाल हो गया है, यमुना भी रंगों के कारण लाल हो गई है, और ग्वाले, गाय भी उसी लाल रंग में रंग गई है। इस होरी के सुन्दर वर्णन से नायिका के प्रसन्नता का भाव दर्शाया गया है जिससे श्रृंगार रस का संयोग पक्ष दृष्टव्य हो रहा है। प्रस्तुत होरी में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों 'लाल श्याम लाल भई राधे, लाल नवल ब्रजवाम' एवं 'अम्बर लाल लाल भई जमुना, लाल गऊंऐं गोपाल' से नायिका का ईश्वर के प्रति प्रेम दर्शाया गया है। प्रेम परक शब्दों के साथ ही अबीर, गुलाल जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जिसके द्वारा सयोग श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हो रही है।

रागानुसार रस

उपशास्त्रीय विधाओं के गायन हेतु राग काफी, राग खमाज, राग भैरवी इत्यादि संकीर्ण प्रकृति के रागों का प्रयोग किया जाता है। इन सभी रागों में से एक राग गारा भी है। प्रस्तुत होरी राग गारा के स्वरों में निबद्ध की गई है। गारा के अतिरिक्त कहीं–कहीं पर जय–जयवन्ती रागों की झलक भी दिखाई गई है। संकीर्ण प्रकृति का राग होने के कारण प्रस्तुत होरी में प्रयुक्त होने वाले स्वरों से श्रृंगार रस की निष्पत्ति हो रही है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव

होरी परक शब्दों एवं उसमें स्वरों के संयोजन से गिरिजा देवी ने नायिका के उत्साह के भाव को दर्शाया है:–

नि़	नि़	नि़	नि़	सा	सा	रे	ग	नि़	सा	ध़	नि़	सा	–	सा	–
उ	ऽ	त	अ	बी	ऽ	र	गु	ला	ऽ	ऽ	ल	ला	ऽ	ली	ऽ
रेग	मम	म–	ग–	गरे	सा	नि़	–								
छाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ईऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ								

अन्तरे में प्रयुक्त स्वर एवं शब्दों के प्रयोग द्वारा गिरिजा देवी ने नायिका का प्रेम भाव अभिव्यक्त किया है :–

–	नि़	–	–	स–	–	–	–	ग	–	–	म	रे	ग	रे	सा
ऽ	ला	ऽ	ल	श्या	ऽ	म	ऽ	ला	ल	भ	ई	रा	ऽ	धे	ऽ

ग	–	–	–	–	–	ग	प	म	–	रे	ग	रे	–	सा	–
ला	ऽ	ल	न	व	ल	ब्र	ज	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ

यहां पर गिरिजा देवी ने स्वर साहित्य के समन्वय द्वारा होरी के वर्णन के साथ–साथ नायिका की प्रसन्नता का भाव एवं प्रेम का भाव सुन्दरता से व्यक्त किया है।

रे	–	सा	नि़	सा	–	–	–	–	–	ग	–	ग	म	ग	म
अ	ऽ	म्ब	र	ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ला	ल	ऽ	ऽ	भ	ई
–	रे	ग	रे	सा	रे	ग	स	–	–	सारे	गम	प–	म–	–	–
ऽ	ज	मु	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	लाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽल	ग	ऽ
–	–	–	–	म	ग	रे	स	म	–	–	रे	रे	ग	–	रे
ऊ	ऽ	ऐं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गो	पा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	रे	नि़	सा	रे–	–	नि़	सा	–	–	ध़	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ली	ऽ
ध़	नि़सा	नि़सा	–	सा	–	–	–								
छा	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ई	ऽ	है	ऽ								

शैली पर ताल का प्रभाव

अधिकतर होरी गायन हेतु दीपचंदी ताल का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत होरी गायन हेतु कहरवा ताल का चयन किया गया हैं क्योंकि स्वर एवं शब्दों के लगाव हेतु कहरवा ताल ही प्रस्तुत होरी के लिए उपयुक्त प्रतीत हो रही है।

होरी (राग खमाज) पं० छन्नूलाल मिश्र ताल – कहरवा

स्थाई – रंग डारूंगी डारूंगी रंग डारूंगी, नंद के लालन पे।

सांवरी रंग लाल कर दूंगी।।

अन्तरा –1. नारी बनाय के नाच नचाऊंगी।

डफ मृदंग के तालन पे।।

अन्तरा –2. डरो ना नेक पकड़ लो इनको

बेंदी लगाऊं इन भालन पे।।

स्थाई –

	सा नि़	सा रे – ग	रे सा नि़ प़
	रं ग	डा रूँ गी डा	रूँ गी रं ग
सा रे – –	– – सा नि़	सा रे ग ग	रे सा नि़ प़
डा रूँ गी ऽ	ऽ ऽ रं ग	डा रूं गी डा	रूँ गी रं ग
– – – –	– – – –	गरे – सा नि़	सा रे – ग
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽऽ होऽ रं ग	डा रूँ गी डा
रे सा – –	साग गग ग म	रे – ग सा–	गरे ग म ग
रूं गी ऽ ऽ	अरे रंग डा रूँ	गी ऽ रे रंग	डाऽ रूँ ऽ ऽ
ग – रे सानि़	– – – –	– – – –	– – – –
गी ऽ रे रंग़	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
– – – –	– – – –	– – – –	– ग़– गम़ ग
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ रंग़ डारूँ़ गी
मग़ रे ग सा–	ग रे ग म	ग – रे सा–	ग रे – –
डारूँ़ गी ऽ रंग़	डा ऽ रूं डा	गी ऽ रे रंग	डा ऽ ऽ ऽ
– – – –	– प– प नि़	– प ध म़	प ग म– –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ रंग डा रूं	गी डा रूं गी	रं ग डारूं़ ऽ
ग – – सा	नि़ सा रे –	ग रे सा नि़	– सा रे ग
गी रे ऽ रं	ग डा रूं गी	डा रूं गी रं	ग डा रूं गी
– – – –	– ग ग म	रे ग – –	– ग – ग
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ न के ऽ	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ नं ऽ द
ग रे ग म	ग रे सा सानि़	सा रे – ग	रे सा नि़ प़
ला ऽ ल न	पे ऽ ऽ रंग़	डा रूं गी डा	रूं गी रं ग
सा रे – –	प ग सा नि़	– – – –	– – – –
डा ऽ रूं गी	हो ऽ रं ग	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
– – – –	– – – –	– – – –	म रे म –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	सा ऽ व री

प – – –	प – – –	म प म ग	म रे म –
रं ऽ ग ऽ	ला ल क र	दूं ऽ गी ऽ	ऽ सां व रे
प – – –	– – – –	– – – –	म रे म –
रं ऽ ग ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ सां व रे
प धनि ध प	प – – –	म प म ग	– प – –
रं ऽऽ ग ऽ	ला ल क र	दूं ऽ गी ऽ	ऽ म लि ऽ
– – मप मग	मग गग म प	मग रे – सानि	–सा रे – ग
गु ला ऽऽ लऽ	दोऊ गाऽ ऽ ल	नऽ पे ऽ रंग	ऽडा रूं ऽ गीडा
रे सा नि प	– सा – रे	– – सा नि	– सा रे ग–
रूं गी रं ग	ऽ डा ऽ रूं	गी रे रं ग	ऽ डा रूं गीडा
रे सा सा नि	सा – – –	– – सा नि	– सा रे ग–
रूं गी रं ग	ऽ डा ऽ रूं	गी रे रं ग	ऽ डा रूं गीडा
रे सा सा नि	सा – – –	– – – –	– प– – –
रूं गी रं ग	डा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ मलि गु ला
मप म ग– –	ध – – ––	धनि ध प –	– – नि– नि
ऽल ऽ दोऊ ऽ	ऽ म लि गुला	ऽल ऽ दो ऊ	ऽ ऽ माल गु
सां प सां निध	प ग म प	ग रेसा सा नि	सा रे – ग
ला ल ऽ दोऊ	ऽ गा ल न	पे ऽऽ रं ग	डा रूं गी डा
रे सा नि प	सा रे – –	– – सा नि	सा रे ग –
रूँ गी रं ग	डा रूं गी डा	रूं गी रे रंग	डा रूं गी ऽ

अन्तरा – 1

	– म रे म	– प – –	– – – –
– – – –	ऽ ना ऽ री	ब ना य के	ऽ ऽ ऽ ऽ
ऽ ऽ ऽ ऽ	– म रे म	म प धनि– नि	म पध प –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ना ऽ री	ऽ ब नाऽऽ ऽ	ऽ ऽऽ ऽ य

नि – नि प
के ऽ ना री
सा धनि ध प
ऽ ऽऽ ऽ ऽ
नि ध म ध
ब ना ऽ य
– – प –
ऽ ऽ ड फ
सा रे – ग
डा रूं गी डा
– ग म प
ऽ ता ल न
प सा – रे
ग डा ऽ रूं
– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ
– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ
– – साग –
ऽ ऽ डफ मृ
सां रें – गं
डा रूं गी डा
सा रे – –
डा रूॅ गी ऽ

म ग – प
ब ना ऽ य
– – प म
के ऽ ना री
– प प –
ऽ के ना य
– –म – ग
मृ ऽदं ग के
रे सा – –
रूं गी ऽ ऽ
ग रेसा सा नि
पे ऽऽ रं ग
– – सा नि
गी रे रं ग
– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ
निसां रें– सांनि –
ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
– – मग मग
दं ग केऽ ऽऽ
रें सां – निप
रूं गी ऽ रंग
– – सा नि
रूं गी रं ग

प धनि सांनि –
ना ऽऽ ऽऽ री
गम पप म धध
बऽ नाऽ य केऽ
म म म ग
न चा ऊं गी
ग – म प
ता ऽ ल न
– – प– प
ऽ ऽ उफ मृ
सा रे – ग
डा रूं गी डा
– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ
– – नि– –
ऽ ऽ डफ मृ
सांरें गं– रेंसां –
ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
– गं मं पं
ऽ ता ल न
सां –– प– ––
डा रूंगी डा रूंगी
सा रे ग ग
ऽ डा ऽ ऽ

नि सां – नि
ना री ब ना
प ध प म
ना ऽ री ऽ
– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ
ग रेसा सा नि़
पे ऽऽ रं ग
प ध म ग
दं ग के ऽ
रे सा – नि़
रूं गी ऽ रं
– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ
– सां – –
दं ग के ऽ
– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ
गं रेंसां सां नि
पे ऽऽ रं ग
ग– –– सा नि़
डा रूंगी रं ग
रे सा नि़ प़
रूॅ गीरे रं ग

अन्तरा–2

		– म रेम म	प – मं पध
		ऽ ड रोऽ ना	ने ऽ क ऽऽ
म रे म –	प निध प –	– म रेम म	प – – –
ड रो ना ऽ	ने ऽऽ क ऽ	ऽ ड रोऽ ना	ने ऽ क ऽ
सां ध म रेम	प – – –	– प – ––	ग प म –
हॉ ऽ ऽ रोऽ	ना ने ऽ क	ऽ प क ऽलो	उ न को ऽ
– – – रेम	प – – –	– नि ध निधनि	पध सांनि धप –
ऽ ऽ ऽ रो	ना ने ऽ क	ऽ प क ड़लोऽ	ऽऽ ऽऽ उन को
– – – रेम	प – – –	– प – ––	ग प म –
ऽ ऽ ड रो	ना ने ऽ क	ऽ प क ड़लो	ई न को ऽ
– – प –	– – – –	ग म प –	– म प मग
ऽ ऽ बे दी	ऽ ऽ ऽ ऽ	अ रे बे दी	ऽ ल गा ऊंऽ
ग – ग मप	ग रेसा सा नि़	सा रे – ग	रे सा नि़ प़
इ न भा लन	पे ऽऽ रं ग	डा ऊँ गी डा	ऊँ गी रं ग
सा रे – –	– – प –	– – – मम	ग– ध ध नि
डा ऊँ गी ऽ	ऽ ऽ बे दी	ल गा ऊं इन	अरे बे दी ल
ध प – –	– नि नि सां	प सां नि धप	पध निसां –– –
गा ऊं इ न	ऽ बे दी ल	गा ऊं इ नऽ	बेऽ ऽऽ ऽऽ ऽदी
X	0	x	0

कहरवे की लय –

– सां ध निनि	धप नि निसां धसां	नि ध प म	ग – – –
ऽ ल गा ऊंऽ	इन बे ऽऽ ऽऽ	दी ऽ ल गा	ऽ ऊं इ न
ग म प –	मग रेसा सा नि	सा रे – ग	रे सा नि़ प़
भा ऽ ल न	पेऽ ऽऽ रं ग	डा ऊँ गी डा	ऊँ गी रं ग[9]
X	0	x	0

प्रस्तुत होरी पं० छन्नूलाल मिश्र द्वारा राग मिश्र खमाज में निबद्ध की गई है। होरी, अबीर, गुलाल कान्हा से सम्बन्धित होती है। परन्तु प्रस्तुत होरी राधिका की होरी है। इनमें राधा द्वारा कृष्ण को रंग लगाने का सुन्दर वर्णन किया गया है। पं० छन्नूलाल ने साहित्य में वर्णित राधिका के भावों को स्वरों से गूंथकर इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि मानो कि राधिका की होरी का एक सजीव चित्रण हमारे समक्ष सजीव हो उठा हो।

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत होरी राधिका की होरी है इसलिए राधा द्वारा कृष्ण के साथ रंग खेलने की चर्चा इसमें की गई है। प्रस्तुत होरी में राधिका बहुत उत्सुक है कि आज तो नंद के लाल (श्रीकृष्ण) पर रंग डारूँगीं और उनकी साँवरी सूरत को लाल रंग से लाल कर दूँगी। राधिका कहती है कि आज तो कान्हा को नहीं छोड़ूँगी उन्हें नारी बनाकर डफ, मृदंग की ताल पर नाच नचाऊँगी। राधिका अपनी सखियों से कहती है कि तुम डरो मत, कन्हैया को पकड़ लो आज तो इनके माथे पर बेंदी लगाकर ही रहूँगी। प्रस्तुत होरी में राधिका का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेमभाव दृष्टव्य हो रहा है। प्रस्तुत होरी में राधिका द्वारा 'रंग डारूंगी डारूंगी, रंग डारूंगी जैसे प्रयुक्त शब्दों से श्रृंगार रस की निष्पत्ति हो रही है। इसके साथ ही 'नारी बनाय के नाच नचाऊँगी' एवं 'बेदी लगाऊं इन भालन पे' इन पंक्तियों द्वारा श्री कृष्ण को नारी बनाने की एवं माथे पर बेंदी लगाकर सजाने की बात की गई है यहाँ पर भी श्रृंगार रस की पुष्टि हो रही है।

रागानुसार रस

प्रस्तुत होरी में राग खमाज के स्वरों का प्रयोग हुआ है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि राग खमाज के अन्तर्गत दोनों ही प्रकार की श्रृंगारपरक बन्दिशों का गायन किया जाता है। चूंकि होरी एक लोकविधा है। लोक के विविध रंग इसमें दिखाई देते है इसलिए प्रस्तुत होरी में प्रयुक्त स्वरों के द्वारा श्रृंगार रस मुखरित किया गया है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव

प्रस्तुत होरी में पं० छन्नूलाल जी ने स्वरों एवं शब्दों के माध्यम से राधिका की होरी को बड़ी ही खूबसूरती से व्यक्त किया है। प्रस्तुत होरी में राधा की उत्सुकता का वर्णन किया गया है कि आज तो मैं श्याम पर रंग डारूंगी जो कि इस प्रकार व्यक्त किया गया हैः–

				–	प–	प	नि	–	प	ध	मं	प	ग	म	–
				ऽ	रंग	डा	रूँ	गी	डा	रूं	गी	रं	ग	डारूँ	ऽ
ग	–	–	सा	नि़	सा	रे	–	ग	रे	सा	नि़	–	सा	रे	ग
गी	रे	ऽ	रं	ग	डा	रूँ	गी	डा	रूँ	गी	रं	ग	डा	रूँ	गी
–	–	–	–	–	ग	ग	म	रे	ग	–	–	–	ग	–	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नं	द	के	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नं	द	के
ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	सानि	सा	रे	–	ग	रे	सा	नि़	प़
ला	ऽ	ल	न	पे	ऽ	ऽ	रंग	डा	रूं	गी	डा	रूं	गी	रं	ग
सा	रे	–	–												
डा	ऽ	रूं	गी												

												म	रे	म	–
												ऽ	सां	व	रे
प	धनि	ध	प	प	–	–	–	म	प	म	ग	–	प	–	–
रं	ऽऽ	ग	ऽ	ला	ल	क	र	दूँ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	म	लि	ऽ
–	–	मप	मग	मग	गग	म	प	मग	रे	–	सनि़	–सा	रे	–	ग
गु	ला	ऽऽ	लऽ	दोऊ	गाऽ	ऽ	ल	नऽ	पे	ऽ	रंग	ऽडा	रूं	गी	

प्रयुक्त स्वर–साहित्य समन्वय द्वारा उत्सुकता के साथ–साथ राधिका के प्रसन्नता के भाव को भी दर्शाया गया है।

												प	ध	प	म
												ना	ऽ	री	ऽ
नि	ध	म	ध	–	प	प	–	म	म	म	ग	–	–	–	–
ब	ना	ऽ	य	ऽ	के	ना	च	न	चा	ऊं	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	प	–	–	–	म–	ग	ग	–	म	प	ग	रेसा	सा	नि़

ऽ ऽ ड फ मृ दं गऽ के ता ऽ ल न पे ऽऽ रं ग
सा रे –
डा रूं गी

अन्तरे में राधिका द्वारा अपनी सखियों के साथ 'डरो ना नेक पकड़ लो इनको' पंक्तियों में हास परिहास का भाव व्यक्त किया गया है:–

म रेम प – – – – प – –– ग प म –
ड रोऽ ना ने ऽ क ऽ प क ड़लो इ न को ऽ
ग म प – – म प मग
अ रे बे दी ऽ ल गा ऊंऽ

ग – ग मप ग रेसा
इ न भा लन पे ऽऽ

शैली पर ताल का प्रभाव

प्रस्तुत होरी ताल कहरवा में निबद्ध है। चंचलता के भाव के कारण कहरवा ताल प्रस्तुत होरी के लिए उपयुक्त हैं। अन्त में चमत्कारिक प्रयोग हेतु लग्गी का प्रयोग किया गया है।

होरी (राग खमाज) बेगम अख्तर ताल – कहरवा

स्थाई– कौन तरह से तुम खेलत होरी रे
देखो लाला मोरी आँखें न खटकें।

अन्तरा– **गारी मैं दूँगी तोसे न डरूँगी,**
अब के फाग में फाग रचूँगी
देखो लाला मोरी चूनर न मसके।

स्थाई–

ग–	रे	स	स	रेम	–	म	–	प	ध	पध
कौऽ	न	ऽ	त	रा	ऽ	से	ऽ	तु	म	ऽऽ
धनि	सं	–	–			निसं		निसरेंसरें		नि–धप
खे	ऽ	ऽ	ऽ			खेऽ		ऽऽऽऽ		लऽऽत

×				2			
–निध	पम	मपनिप	गरेगरे–	स–	–गरेस	सरेग–म	पध
–होऽ	ऽऽऽऽऽऽरी	ऽरेऽऽऽऽ		ऽऽ	ऽकौनऽ	तरऽसे	तुम
0				3			
धमपधस–		–	–	–	–	–	–
खेऽऽऽऽ							
×				2			
–मप	–	पमपम		पमधपग	रे	–	–निग
–होऽ	ऽ	ऽऽऽऽ		होऽऽरीरे	ऽ	–	–तरा
0				3			

–	गसा–	सनिरेस	ग–	सा–	गरे–निध	पध	निसरेसरे
ऽ	सेऽऽ	कौऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	नऽऽऽऽऽऽ		ऽऽऽऽऽऽ
×			2				
स	रे^{ग}गम	गरेस	–रेरेगरे	रेस	सरे^{म}–म	पध	
ऽ	ऽऽऽ	कौनऽ	–कौऽऽऽ	नऽ	तरऽसे	तुम	
0			3				
$^{नि}$सं–नि	धग	रेस		–	रेसग–		स–स–
खेऽऽ	ऽल	तऽ			होऽऽऽ		रीऽरेऽ
×			2				
स	–	निध	पधसरेग	–सनि–	सग–	सरे–	
ऽ	ऽ	ऽऽ	एऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	तराऽ	ऽऽऽ	
0			3				
–रेरेसरे	रेग	ग–गसा–	–निसग–	–गम	ग–रेस–	सगप	
ऽऽऽऽऽ	ऽऽ	सेऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ	कौऽऽ	
×			2				
–	धपमगरे–	गरेस–	–रेग	रेसस	रे^{म}–म–	पध	
ऽ	नऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽकौऽ	नऽत	रऽसेऽ	तुम	
0			3				
निसं–नि	धग	रेस	–	म	पप	धपमपधप	
खेऽऽऽ	ऽल	तऽ	–	खे	लत	होऽऽऽऽरी	

×			2			
गरे	–	ध–ध	–धनि	–धनि	धनि–	प^{ध}–प
रेऽ	ऽ	देऽखो	ऽलाला	ऽऽऽऽ	ऽऽऽ	मोऽरी
0			3			
–धपम–ममधनि		–धनि–प–––	–	^{प}ध–	निध	$^{नि}$संध–
–देऽऽऽऽऽऽ		ऽऽऽऽखोऽऽ–	–	–देऽ	खोऽ	लालाऽ
×			2			
पध	पधप	–	–मपधनिसं	नि–	ध$^{नि}$धनि–	ध–प–
ऽऽ	ऽमोरी	–	–देऽऽऽऽ	खोऽ	लालाऽऽ	मोऽरीऽ
0			3			

प–धप	मपधप	मपगम–	रे–	रे––	गरेनिस	–सग
आँऽखेंऽ	ऽऽऽन	खटकेंऽ	ऽऽ	कौऽऽ	नऽऽऽ	–ऽऽ
×			2			
पध$^{नि}$–ग	–रेस	–स	ग–गम	गरे	सरे^{म}–म	पध
ऽऽ–कौ	ऽनऽ	ऽत	राऽऽऽ	सेऽ	तराऽसे	तुम
0			3			
निसंधधनिसं	–	–	–	–	निसं	–
खेऽऽऽऽ	ऽ–	–	–	–	खेऽ	ऽ
×			2			
निसरेंसरें	नि–धप	–	–धप	मपमपधप	ग–रे–	गरेस–
ऽऽऽऽऽ	लऽऽत	–	–होऽ	ऽऽऽऽऽरी	रेऽऽऽ	ऽऽऽऽ
0			3			
–सनि	रे–	ग–रेस	–स	ग–	ग–स	–मपम
–कौऽ	ऽऽ	ऽऽनऽ	ऽत	राऽ	ऽऽसे	–कौऽऽ
×			2			
–गम	ग–स–	–प	–	धपमगमगरे	प–	पग–गमध
ऽऽऽऽ	ऽऽनऽ	–त	–	राऽऽऽऽऽऽ	ऽऽ	तराऽऽऽऽ
0			3			
पगरेस	–स	ग–मप	मगम–	ग–स–	–	–

ऽसेऽऽ	–कौ	ऽऽनत	राऽऽऽ	सेऽऽऽ	–	–
×			2			
–	सगरेगमप	ग–रेगरे	सा––रे	ग–स–	सरेम–म	पध
–	ऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽकौ	ऽऽनऽ	तरऽसे	तुम
0			3			
नि–धनिसं	–	–	–	–	–	
खेऽऽऽऽ	–	–				
×			2			

अन्तरा :

–	–	–मपनि–	नि–सं	–	–	निधसांसं
–	–	–गाऽरीऽ	मैंऽदूं	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽगी
×			2			
–	–	मपनि–नि	सं–	निसरें–	निध	निसं–
		गाऽरीऽमैं	दूंऽ	ऽऽऽऽ	गीऽ	ऽऽऽ
0			3			
–	ध–धनि	–धप–	–पधप	पधनिसंनि	धनिपग	रे–गरेस
–	तोऽसेना	ऽऽऽऽ	–इरूंऽ	ऽऽऽऽगी	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ
×			2			
–	–	–	–	मपनिसंगरें	निसंगनिध	नि–सं–
			–	गाऽऽऽऽरी	मैंऽऽऽऽ	ऽऽदूंऽ
0			3			
सं	–	–	–	–	निसं–निसं	–नि
गी	–				तोऽसेना	ऽऽऽ
×			2			
पपधप	मपमपनिसं	रेंनिधमप	–	–मप	निनि–सं	–सं
ऽडरूंऽ	ऽऽऽऽऽ	गीऽऽऽऽ	–	ऽअब	केफाऽऽ	ऽऽग
0			3			
सं–निध	सां–	–	–		नि–धरें	–नि–
मैंऽऽऽ	ऽ–	–			ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ
×			2			
धनिसं–	निसरेंसं–	–	–	–	–	–

ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ	–				
0			3			
–मप	नि–निसं	नि–	सं–	–	ध–	निरेंनि–
–अब	केऽफाऽ	गऽ	में–	–	फाऽ	गरचूंऽ
×			2			
ध–मपमप	–मग–	गमनि–प	–	–	–धनि	सं–
ऽऽऽगीऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ	–	–	ऽदे	ऽ–
0			3			

–	गरेंध–सं	संसं–	–	–	–	–
खोऽऽऽऽ	लालाऽ					
×			2			
–	–	–	–	–	–	निसं देखो
0			3			
–रेंनि–	धप	–	–प	धपमपधधधप	मप–	गरेस–
ऽलालाऽ	मोरी	ऽ	ऽचूं	नऽऽऽऽऽऽर	मसऽ	केऽऽऽ
×			2			
–सगरेम	–पमग	रेस–	–धप	मगरेस	–मगप	मगरेस
–ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽ–	–हाँऽ	ऽऽऽऽ	–हाँऽऽ	ऽऽऽऽ
0			3			
सरे–	–मगरे	–स	म–	पधपमगरेम–	गरे–स	–सरेगम
कौऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽन	कौऽ	ऽऽऽऽऽऽऽ	नऽऽऽ	–ऽऽऽऽ
			2			
पधगपगधपमग	धपम–	ग–गमग	रे–	रेगरेस	सरे[म]–म	पध
ऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ	ऽऽ	कौऽनऽ	तरऽसे	तुम

तीनताल

सं	–	नि	ध	प	प	–	–	–	–	–	–	–	–
खे	ऽ	ऽ	ऽ	ल	त	ऽ	ऽ	–	लग्गी का प्रयोग				

×	2	0	3^{10}

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत होरी में नायक होरी के बहाने नायिका से जो छेड़छाड़ कर रहा है, उसके लिए नायक नायिका को उलाहना देती है और कहती है कि किस तरह से तुम होरी खेल रहे हो, तुम मुझे इस तरह से रंग मत लगना, जोकि मेरी आँखों में खटके और फिर भी अगर तुम नहीं माने तो मै तुमसे बिल्कुल भी नहीं डरूँगी और गारी भी दूँगी। अन्त में नायिका नायक से कहती है कि अब के फागुन के महीनें में होली खेलूँगी लेकिन तुम्हारे होरी खेलने से मेरी चुनरी न बिगड़े, तुम मेरे साथ नटखट छेड़छाड़ न करो बस प्रेम से होली खेलो। प्रस्तुत होरी में नायिका ने कई भावों की अभिव्यक्ति की है उदाहरणस्वरूप – 'कौन तरह से तुम खेलत होरी, में शिकायत का भाव दर्शाया है। 'गारी मै दूँगी, तोसे ना डरूँगी' में निडरता का भाव तथा 'देखो लाला मोरी चूनर न मसके' में विनती का भाव बड़ी ही सुन्दरता से व्यक्त किया है। जिसके द्वारा संयोग श्रृंगार रस की पुष्टि हो रही है।

रागानुसार रस

होरी भी लोकगीत विधा के अर्न्तगत आती है। जिस प्रकार कजरी और चैती में किसी विशेष राग का प्रयोग नहीं किया जाता उसी प्रकार होरी भी लोक में प्रचलित शैली होने के कारण किसी विशेष राग में निबद्ध नहीं की जाती है। प्रस्तुत होरी उपशास्त्रीय ढंग से प्रस्तुत की गई है इसलिए प्रस्तुत होरी में कई रागों का मिश्रण बड़ी ही चमत्कारिक ढंग से किया गया है उदाहरणस्वरूप काफी राग में निबद्ध होने पर भी कहीं–कहीं पर मल्हार, जोग तो कहीं पर देस और पीलू राग की झलक भी दृष्टव्य होती है। इस प्रकार राग काफी के अतिरिक्त अन्य रागों की स्वरावलियों के प्रयोग से श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हो रही है। जो कि इस प्रकार है –

मल्हारवाची संगतियाँ

स रेम – म –, नि ध नि – सां –, नि$^{सा}$ – नि
त रा ऽ से ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ दू ऽ, तोऽ ऽ से
सां – – नि प,

ना ऽ ऽ ऽ ऽ,

जोगवाची स्वर समूह

म	प	म	–	गम	ग	–	स	–,	स	ग	–	म	प
कौ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	न	ऽ,	कौ	ऽ	ऽ	न	त
म	ग	म	ग	–	स	–,							
रा	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ							

देसवाची स्वरावली

नि	सां	नि	सारें	सां	रें	नि	–	ध	प,
खे	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	त,

पीलूवाची स्वर समूह

नि़	ग	–	ग	सा	सनि़	रेस	ग	–	स	–,		
त	रा	ऽ	से	ऽ	कौऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,		
रे	स	ग	–	स	–	स	–	नि़ध़	प़ध़	सरे	ग	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	रे	ऽ	ऽऽ	एऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
स	नि़	सग	–	सरे								
ऽ	ऽ	तरा	ऽ	ऽऽ								

स्थायी एवं अन्तरे में श्रृंगार रस को आधार मानते हुए इस प्रकार की स्वरावलियों का प्रयोग किया गया है मानो सचमुच कोई बाल कृष्ण के सम्मुख अपने हिय की बात प्रस्तुत कर रही हो।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भावः–

स्वर एवं शब्द के अनुसार बेगम अख्तर ने प्रस्तुत होरी में कई भाव प्रस्तुत किये है। सर्वप्रथम स्थाई में कौन तरह से तुम खेलत होरी में शिकायत का भाव बड़ी ही सुन्दरता से प्रस्तुत किया हैः–

			–रेरेगरे	रेस	सरेम–म	पध	
			–कौऽऽऽ	नऽ	तरऽसे	तुम	
ना सां–नि	धग	रेस	–	–	रेसग–	स–स–	
खेऽऽ	ऽल	तऽ	ऽ	ऽ	होऽऽऽ	रीऽरेऽ	

प्रस्तुत होरी में बेगम अख्तर ने स्वर और साहित्य के माध्यम से विनती का भाव इस प्रकार व्यक्त किया है:–

		ध–ध	–धनि	–धनि	धनि–	प[ध]–प
		देऽखो	ऽलाला	ऽऽऽऽ	ऽऽऽ	मोऽरी
–धपम–मपधनि	–धनि	प–––	–	[प]ध–	निध	[नि]सांध–
–देऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽ	खोऽऽ	–	देऽ	खोऽ	लालाऽ
पध	पधप	–	मपधनिसा	नि	ध[नि]धनि–	ध–प–
ऽऽ	ऽमोरी	ऽ	–देऽऽऽऽ	खोऽ	लालाऽऽ	मोऽरीऽ
प–धप	मपधप	मपगम				
ऑऽखेऽ	ऽऽऽन	खटकेंऽ				

अन्तरे में शब्दों के साथ–स्वरों का इतनी सुन्दरता से संयोजन हो रहा है कि निडरता का भाव स्वतः ही परिलक्षित हो रहा है।

		–मपनि–	नि–सं	–	–	निधसांसां
		–गाऽरीऽ	मैऽदूं	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽगी
–	–	मपनि–नि	सं–	निसारें–	निध	निसां–
		गाऽरीऽमैं	दूंऽ	ऽऽऽऽ	गीऽ	ऽऽऽ
–	ध–धनि	–धप–	–पधप	पधनिसांनि	धनिपग	रे–गरेस
–	तोऽसेना	ऽऽऽऽ	–ऽरूंऽ	ऽऽऽऽगी	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ
–मप	नि–निसां	नि–	सां–	–	ध–	निरेंनि–
–अब	केऽफाऽ	गऽ	मेंऽ	ऽ	फाऽ	गरचूंऽ
ध–मपमप	–मग–	गमनि–प	–			
ऽऽऽगीऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ				
						निसां
						देखो
–रेंनि–	धप	–	–प	धपमपधधधप	मप–	गरेस–
–सगरेम	–पमग	रेस–	ऽचूं	नऽऽऽऽऽर	मसऽ	केऽऽऽ
–सगरेम	–पमग	रेस–				
–ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽ–				

शैली की तालानुसार न्यायसंगतता

सर्वाधिक ठुमरी हेतु प्रचलित दीपचंदी ताल का प्रयोग इस होरी गायन में प्रयुक्त किया गया है। अन्त में ठुमरी की भाँति ही तीनताल का प्रयोग करते हुए कहरवा में प्रवेश कर लग्गी का प्रयोग भी किया गया है।

होरी – (राग पीलू) शोभा गुर्टू (ताल दीपचंदी)

स्थाई– मैं तो खेलूंगी उन्हीं से होरी गुईंयाँ।
मोहे गले लगाय बरजोरी, पइयां परूं री बाह्य गहो री।

अन्तरा– लइके अबीर गुलाल कुमकुमा
वो तो रंग की भरी पिचकारी गुईंयां।

स्थाई–

रे नि– स – – – – – निध़ ध़नि सरे ग रे – –नि^स
आ ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ अरि होऽ ऽ री ऽ ऽऽ
रे स नि़ ध–, ध–, म– ध^नि ^निस – – – – निस निध –, ध – नि ध
गु ईं ऽ ऽऽ, गुईं ऽ यॉं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ, मैं ऽ तो ऽ

स	–	–	स	–	स	–	–	–स	सरे	ग	नि़स	रे	ध^नि
खे	ऽ	ऽ	लूं	ऽ	गी	ऽ	–	–उ	नऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	हीं
ध़	–	ध	–	नि़	रे	रे	–	^गम	ग	रे	स	ध	नि़
से	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	री	–	गुईं	यॉं	ऽ	ऽ	मैं	तो
स	–	–	स	–	स	–	–	–	–	–	–	–	सरे
खे	ऽ	ऽ	लूं	ऽ	गी	ऽ	–	–	–	–	–	–	मोहे
ग	ग	ग	म	ग	–	^मपप	ग	–	म	ग	रे	स	रे
ग	ले	ल	गा	य	ऽ	बर	जो	ऽ	री	हो	ऽ	मो	हे
ग	ग	ग	म	ग	म	प	ग	म	–	ग	ग	स	रे
ग	ले	ल	गा	य	ब	र	जो	री	ऽ	प	इ	यॉं	प
नि	ध़	–	–	ध	नि	रे	स	ध	ध	पम़	ध	–	नि़
रू	री	ऽ	–	बा	ऽ	ह्य	ग	हो	रे	ऽऽ	मैं	ऽ	तो
×			2				0			3			

स	–	–		स	–	स	–								
खे	ऽ	ऽ		लूं	ऽ	गी	ऽ								

अन्तरा–

स	स	–		ग	रे	रेग	म		ग	म	–		–	म	–	–
ल	इ	ऽ		के	ऽ	ऽऽ	ऽ		अ	बी	ऽ		ऽ	र	–	–
–	स	ग		–	ग	–	म		रे	रेग	म		ग	–	स$^{रे}$	–
–	गु	ला		ऽ	ल	ऽ	कु		म	कुऽ	ऽ		म	ऽ	ऽ	ऽ
स	$^{नि}$स	–		–	नि॒स	नि॒स	ग		रे	स	–		ध़	–	नि	–
आ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ		वो	ऽ	तो	ऽ
स	स	–		स	–	–	स		सरे	गग॒	रेग॒		ध़	–	ध़	–
रं	ग	ऽ		की	ऽ	ऽ	भ		रीऽ	ऽऽ	ऽऽ		पि	ऽ	च	ऽ
–	ध़	नि़		ग॒	–	रे	–		रेग॒	मप	धप॒		ग	–	रे	ध़नि॒
–	का	ऽ		ऽ	ऽ	री	ऽ		गुईं	ऽऽ	ऽऽ		याँ	ऽ	ऽ	मैंतो
स	–	–		स	–	स	–									
खे	ऽ	–		लूं	ऽ	ऽ	ऽ									
×				2					0				3^{11}			

साहित्यानुसार भाव व रस

प्रस्तुत होरी में शब्दों के माध्यम से नायिका का नायक प्रति प्रेम भाव अभिव्यक्त किया गया है। 'मैं तो खेलूंगी उनहीं से होरी गुईयां' जैसे शब्दों के प्रयोग द्वारा नायिका के नायक के साथ होरी खेलने की इच्छा के साथ–साथ उसका प्रेम भाव भी छिपा हुआ है जिससे स्वतः ही श्रृंगार रस की पुष्टि हो रही है। इसके साथ ही 'लइके अबीर गुलाल कुमकुमा, वो तो रंग की भरी पिचकारी गुईयां' इन शब्दों के माध्यम से भी श्रृंगार रस का संयोग पक्ष परिलक्षित हो रहा है।

रागानुसार रस

प्रस्तुत होरी राग पीलू पर आधारित है। वस्तुतः पीलू क्षुद्र प्रकृति का राग माना जाता है, जिसमें रागवाची स्वर समूह के अतिरिक्त विवादी स्वर के नाते एक स्वर के दो रूपों का प्रयोग भी किया जाता है। मिश्र पीलू में तो यह संभावना प्रबल रूप में स्थापित हो जाती है। पीलू एक ऐसा राग है जिसमें उपशास्त्रीय विधाओं का निर्वहन अत्यन्त सरलता से किया जाता है। संकीर्ण प्रकृति का राग होने के कारण इसमें अधिकतर श्रृंगारपरक बंदिशों का गायन ही किया जाता है। प्रस्तुत होरी में भी प्रयुक्त राग पीलू के स्वरों से संयोग श्रृंगार रस की अभिव्यंजना हुई है।

स्वर एवं शब्द के अनुसार भाव

प्रस्तुत होरी में शोभा गुर्टु ने होरी सम्बन्धित शब्दों को स्वरों में गूंथकर कई अन्यत्र भावों से सुसज्जित किया है। सर्वप्रथम स्थाई में नायिका की प्रसन्नता के साथ उसके प्रेम के भाव की अभिव्यक्ति इस प्रकार की गई हैः–

										ध	–	नि॒	ध
										मैं	ऽ	तो	ऽ
सा	–	–	सा	–	सा	–	–	–सा	सारे	ग	नि़सा	रे	ध[नि]
खे	ऽ	ऽ	लूं	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽउ	नऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	हीं
ध़	–	ध़	–	नि॒	रे	रे	–	[ग]म	ग॒	रे	सा	ध	नि॒
से	ऽ	हों	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	गुई	यॉं	ऽ	ऽ		

यहाँ पर भी स्वर एवं शब्दों के समन्वय द्वारा नायिका का प्रेम का भाव प्रकट हो रहा है–

												सा	रे
												मो	हे
ग	ग	ग	म	ग	म	प	ग	म	–	ग॒	ग॒	सा	रे
ग	ले	ल	गा	य	ब	र	जो	री	ऽ	प	इ	यॉं	प
नि़	ध़॒	–	–	ध	नि़॒	रे	सा	ध़॒	ध़॒				
रू	री	ऽ	–	बा	ऽ	ह	ग	हो	रे				

अन्तरे में होरी से सम्बन्धित शब्दों का स्वरों के साथ गुथांव करने पर भी प्रेम भाव परिलक्षित हो रहा है –

सा	सा	–		ग	रे	रेग	म		ग	म	–		–	म	–	–
ल	इ	ऽ		के	ऽ	ऽऽ	ऽ		अ	बी	ऽ		ऽ	र	ऽ	ऽ
–	सा	ग		–	ग	–	म		रे	रेग	म		ग	–	सा॑	–
ऽ	गु	ला		ऽ	ल	ऽ	कु		म	कुऽ	ऽ		म	ऽ	ऽ	ऽ
													ध़	–	नि	–
													वो	ऽ	तो	ऽ
सा	सा	–		सा	–	–	सा		सारे	गग	रेग		ध़	–	ध़	–
रं	ग	ऽ		की	ऽ	ऽ	भ		रीऽ	ऽऽ	ऽऽ		पि	ऽ	च	ऽ
–	ध़	नि		ग	–	रे	–		रेग	मप	धप		ग	–	रे	धनि
ऽ	का	ऽ		ऽ	ऽ	री	ऽ		गुई	ऽऽ	ऽऽ		यां	ऽ	ऽ	मैतो

शैली पर ताल का प्रभावः–

सर्वाधिक ठुमरी हेतु प्रचलित दीपचंदी ताल का प्रयोग इस होरी गायन में प्रयुक्त किया गया है। अधिकतर होरी गायन हेतु भी दीपचंदी ताल का प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत अध्याय में ऋतुपरक उपशास्त्रीय विधाएँ कजरी, चैती और होरी की बन्दिशों में संगीत–साहित्य समन्वय का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि–

निष्कर्ष –

- कुछ बन्दिशें लोकाधारित है अर्थात् जो लोक संगीत पर आधारित है, जो आधुनिक युग में उपशास्त्रीय संगीत का अंग बन चुकी है जैसे– कजरी, चैती, होरी आदि।
- इस प्रकार उपशास्त्रीय संगीत को भी स्थूल रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है– क. उपशास्त्रीय भावपरक विधायें, ख. उपशास्त्रीय ऋतुपरक विधाये।
- उपशास्त्रीय भावपरक विधाओं के अन्तर्गत ठुमरी, दादरा, टप्पा इत्यादि आते है।
- उपशास्त्रीय ऋतुपरक विधाओं के अन्तर्गत कजरी, चैती, होरी, सावनी, बारहमासा आदि।

कजरी सावन में गाई जाती है, होरी, फागुन में और चैती चैत्र मास में गाई जाती है। ये सभी लोक विधायें है जिन्होंने शास्त्रीय संगीत के मंच पर अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति के बाद श्रोताओं की इस प्रकार की प्रवृत्ति बन चुकी है कि शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति के बाद उपशास्त्रीय संगीत की रसानुभूति करना चाहते है। उपशास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा अधिक रसयुक्त होता है क्योंकि इसमें किसी प्रकार के राग नियमों का प्रयोग नही किया जाता है।

ऋतुपरक उपशास्त्रीय बन्दिशों में :

कजरी :

कजरी सावन में गायी जाने वाली एक विधा है–

- कजरी में सावन के गीतों का आधिक्य देखने को मिलता है।
- सावन ऋतु के अनुरूप प्रकृति का चित्रण भी बड़ी सुन्दरता से किया जाता है। जैसे– बिजली का चमकना, वृक्ष पर पत्तियों का आ जाना, दादुर, मोर, पपीहा, कोयल आदि का बोलना आदि जैसे–

  ''घिर आये बदरा झुकि आये बदरा,

  राधे झूलन पधारो घिर आये बदरा।

  दादुर मोर पपीहा पुकारे झींगुर की झनकार,

  कोयल मीठी तान सुनावत अमुवा की डार।

  राधे झूलन पधारो घिर आये बदरा।''

- इन गीतों में संगीत और साहित्य के प्रयोग द्वारा श्रृंगार रस का आधिक्य मिलता है एवं अधिकतर बन्दिशों में विरहदग्धा नायिका का चित्रण परिलक्षित होता है जैसे– झूला झूलते

समय अपने प्रभु व नायक के न होने पर विरह वेदना प्रकट करना इत्यादि की झलक दृष्टिगोचर होती है उदाहरणस्वरूप –

''नहीं आये घनश्याम घिर आई बदरी।''

- करूण रस सामान्यतः नायिका के द्वारा प्रस्तुत की गई कजरियों में दिखाई पड़ता है जैसे– पति के विदेश गमन पर, पति के आगमन की प्रतीक्षा आदि।

- राग व स्वर की दृष्टि से कजरी गीत सावन से सम्बन्धित होने के कारण इसमें उन रागों का प्रयोग किया जाता है जिनका सम्बद्ध सावन ऋतु से होता है जैसे– मल्हार अंग, सारंग अंग आदि। कजरी में पीलू, खमाज, देस, तिलक कामोद, भैरवी, काफी, गारा, झिंझोटी इत्यादि रागों की छाया दिखाई देती है। यद्यपि कजरी में रागों के कठोर नियम नही दिखाई देते है।

- ताल की दृष्टि से कजरी में मुख्यतः दादरा और कहरवा इन्हीं दो तालों का अधिक प्रयोग होता है। कुछ कजरियाँ रूपक ताल व झपताल में भी गायी जाती है।

कजरी के साहित्य में अधिकांशतः वर्षा ऋतु से सम्बन्धित साहित्य होता है एवं वर्षा ऋतु की जलवृष्टि के साथ विरहदग्धा नायिका का नायक की अनुपस्थिति की दुःख प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जब यहीं साहित्य स्वर के साथ समन्वित होता है तो उस बंदिश में प्रयुक्त रस की अभिव्यक्ति अधिक स्पष्ट हो जाती है। स्वर साहित्य के माध्यम से नायिका के विरह के साथ ही साथ मुखरता व चांचल्य भी परिलक्षित होता है। कजरी में वर्षाकालीन साहित्य के अनुरूप ही स्वरों का प्रयोग किया जाता है अर्थात् ऐसे रागों के स्वरों का प्रयोग किया जाता है जो सामान्यतः साहित्य के मिलकर प्रकृति का एक सजीव चित्रण प्रस्तुत कर दे।

चैती :

- चैत मास में गाया जाने वाला एक गीत प्रकार है।

- चैती लोक संगीत का एक प्रकार मात्र है अतः इसका उद्‌भव भी लोकसंगीत से ही माना जाता है। परन्तु चैती भी उपशास्त्रीय विधाओं का एक अभिन्न अंग बन चुकी है।

- चैत मास से सम्बन्धित होने के कारण चैती की बन्दिशों में 'हो रामा' शब्द का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि चैत के महीने में ही भगवान राग का जन्म हुआ था।

- चैती के साहित्य की ओर दृष्टि करने से यह प्रतीत होता है कि चैती के गीतों में श्रृंगार रस की झलक अत्यधिक दिखाई पड़ती है।

- चूँकि चैती एक लोकविधा है और लोकसंगीत से उपजी है इसलिए चैती की बंदिशों का गायन किसी विशेष राग में नहीं किया जाता। इसलिए राग की दृष्टि से चैती में प्रयुक्त होने वाले स्वर–समूह से ऐसा प्रतीत होता है कि चैती किसी विशेष राग की उपज नही है। सामान्यतः चैती गीतों में कई रागों की झलक दिखाई पड़ती है।

- नारी भावना का प्राधान्य होता है अर्थात् चैती के गीतों में नारी की ओर से निवेदन पाया जाता है। उदाहरणार्थ–

  ''चैत मास चुनरी रंगइवे हो रामा

  पिया घर अइहै।

इस प्रकार चैती के गीतों में लालित्य भी अधिक मिलता है।

- ताल की दृष्टि से चैती अधिकतर दीपचंदी ताल में निबद्ध होती है। रूपक, कहरवा आदि तालों में भी चैती सुनने को मिलती है।

चैती चैत्र मास में गाई जाने वाली एक लोकविधा है जो कि उपशास्त्रीय संगीत जगत में अपना एक विशेष स्थान स्थापित कर चुकी है। चैती गीत विधा में प्रयुक्त संगीत और साहित्य के माध्यम से ही उसका भाव, रस आदि स्पष्ट रूप से पता चलता है। स्वर एवं

साहित्य समन्वय के द्वारा चैती गीतों में अधिकतर संयोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति होती है अर्थात् श्रृंगार रस का आधिक्य इसमें दिखाई देता है, प्रमुख रूप से संयोग श्रृंगार का वर्णन मिलता है।

होली :

- होली फागुन के महीने में गाई जाती है।
- होली को दो प्रकार से विभक्त किया गया है– क. पक्की होली, ख. कच्ची होली।
- पक्की होली धमार के अन्तर्गत आती है। धमार में राधा–कृष्ण से सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिससे श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति होती है। धमार 'धमार ताल' में निबद्ध होता है।
- कच्ची होरी लोक संगीत व उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आती है। कच्ची होरी में भी श्रृंगार रस की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
- राधा–कृष्ण का परस्पर होली खेलना, गोपियों का रंग न डालने के लिए निवेदन करना जैसे– 'रंग ना डारो श्याम सनेही' आदि का वर्णन होली के गीतों के अन्तर्गत दिखाई पड़ता है। इसके विपरति रंग डालने का सुन्दर वर्णन भी होरी विधा के अन्दर बड़ी ही सुन्दरता के साथ किया जाता है।
- होली के गीतों के पदों के वर्ण्य विषय में अधिकांशतः राधा–कृष्ण और गोपियों की फाल्गुन मास की लीलाओं का वर्णन होता है। इस प्रकार श्रृंगार रस के संयोग पक्ष तथा वियोग पक्ष दोनों ही रूप इन गीतों में दिखाई देते है।
- ब्रज क्षेत्र में होली गीतों का अधिक प्रयोग किया जाता है।
- अवध में भी होली गीतों का प्रयोग दिखाई पड़ता है।

- बनारस में उपशास्त्रीय ढंग से होली प्रस्तुत करने का अपना अलग ही ढंग है।
- राग की दृष्टि से होली सामान्यतः काफी राग में गाई जाती है। इसके अतिरिक्त खमाज, पीलू, पहाड़ी आदि रागों में भी होली गीतों का प्रयोग भली–भाँति किया जाता है।
- ताल की दृष्टि से काफी राग के साथ दीपचंदी ताल का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त, कहरवा, चांचर, दादरा आदि तालों का प्रयोग भी किया जाता है।

होली फागुन मास में गाई जाती है। होली में अधिकतर राधा–कृष्ण से सम्बन्धित शब्दों का आधिक्य होता है, जिसमें स्वरों के समन्वय द्वारा संयोग श्रृंगार रस मुख्य रूप से परिलक्षित होता है। होली में रंगों से सम्बन्धित जैसे– रंग खेलना, रंग डालना आदि शब्दों का प्रयोग होता है जिससे श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति होती है। होली के गीतों की प्रकृति चंचल होती है इसलिये इनमें चंचल प्रकृति के रागों का अधिक प्रयोग किया जाता है जैसे– पीलू, गारा, काफी आदि।

सन्दर्भ सूची

1. सहगल, डॉ0 सुधा एवं डॉ0 मुक्ता, : 'बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत', पृ0 सं0

2.https://www.youtube.com/watch?v=r1poSK_Td4

3. https://www.youtube.com/watch?v= k47BMi9mV3k

4. https://www.youtube.com/watch?v= C9Kxo1vhOxw

5.https://www.youtube.com/watch?v=YIdotbeFx8s

6.https://www.youtube.com/watch?v=awAiANd7tw8

7.https://www.youtube.com/watch?v=MaWUmkhYoI

8. सहगल, डॉ0 सुधा एवं डॉ0 मुक्ता, : 'बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत', पृ0 सं0 78–82

9. https://www.youtube.com/watch?v= qAq8snoqWNI

10 https://www.youtube.com/watch?v= CRVyFBfvku8

11. सहगल, डॉ0 सुधा एवं डॉ0 मुक्ता, : 'बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत', पृ0 सं0 146–147